ओ३म्

आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 16 जनवरी 2020 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 16 फरवरी 2020 से 22 फरवरी 2020

फाल्गुन कृ. – 08 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 62, अंक 07, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. पटियाला में वार्षिकोत्सव-'आकांक्षाएँ' पर हुआ नए परिसर का शिलान्यास

'समाज को स्वच्छ बनाने के लिए वातावरण के साथ–साथ लोगों के मन को भी स्वच्छ बनाना होगा। जो केवल आत्मन चिंतन और सद्ज्ञान से ही संभव है। डी.ए.वी. के विद्यार्थी बहुत प्रतिभावान् हैं, जो सूर्य के समान अपने ही प्रकाश से चमकते हैं। ये अज्ञानता का अंधकार मिटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाएँगे और लोगों को मानवता का पाठ पढ़ाकर भारत के विश्व गुरु का गौरव पुनः स्थापित करेंगे।" यह कहना था पद्मश्री से अलंकृत डॉ. पूनम सूरी जी (प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) का जो डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिंद्रा रोड, पटियाला में वार्षिकोत्सव पर आयोजित भव्य समारोह 'आकांक्षाएँ' पर मुख्य अतिथि के रूप में अपना आशीर्वाद दे रहे थे।

उत्सव का आयोजन जसोवाल, भादसों रोड़ पर ली गई नई भूमि पर किया गया।

समारोह का शुभारम्भ यज्ञाग्नि में आहुतियाँ प्रदान करके किया गया।

मुख्य अतिथि ने इस शुभ अवसर पर जसोवाल, भादसों रोड़ पर बनाए जाने वाले नए परिसर का शिलान्यास किया।

प्राचार्य विवेक तिवारी ने सत्र 2019–20 की विशिष्ट उपलब्धियों को बताते हुए स्कूल की 'वार्षिक रिपोर्ट' पढ़ी। तदोपरांत स्कूल की आर्केस्ट्रा टीम ने भारत के विभिन्न राज्यों का दर्शन कराते हुए संगीत के साथ 'सुर–सागर आर्केस्ट्रा ट्रेन' प्रस्तुत की। इस अवसर पर प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम में नन्हे–मुन्नों ने भिन्न–भिन्न कोरियोग्राफी के माध्यम से 'विद्यार्थी के मेहनती जीवन में छिपी हुई सच्चाइयों को चित्रित किया। 'अन्नदाता की कहानी' 'मेरा नाम जोकर' 'सर्जिकल स्ट्राइक' 'डेस्क ऑफ लाइफ–वृद्धावस्था' नामक प्रस्तुतियों तथा पंजाबी लोक नृत्य 'झुमर' के द्वारा समृद्ध पंजाबी परंपरा की एक अनूठी तस्वीर पेश की। इस अवसर पर 'अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों की पत्रिका–डोजियर और स्कूल की 'पत्रिका–समर्पण' व कैलेंडर–2020' का लोकार्पण किया।

पुरस्कार वितरण समारोह में शिक्षाविदों, राष्ट्रीय स्तर पर खेलकूद व अन्य प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही स्कूल के 10 पूर्व विद्यार्थियों को भी विशेष रूप से सम्मानित किया। प्राचार्य विवेक तिवारी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

इस अवसर पर श्री एच.आर. गंधार (उपप्रधान) श्री रमेश लीखा, श्री रमेश 'जीवन', श्री नरेश नायर, श्री ए.एस. राय (आई.जी. पटियाला) श्री परमजीत जैसवाल (कुलपति कानून विश्वविद्यालय) तथा श्री हरि सिंह सैनी के अतिरिक्त अन्य डी.ए.वी. संस्थानों के प्राचार्यगण, आर्य समाज, विभिन्न एनजीओ, एलएमसी के सदस्य तथा नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब ने मनाया लाला लाजपत राय जन्मोत्सव

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब के तत्त्वावधान में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय के जन्म दिवस पर एक भव्य आयोजन किया गया। आर्य समाज, लोहगढ़ में *25 जनवरी, 2020 को आयोजित इस* कार्यक्रम में डॉ. रमेश आर्य उप–प्रधान डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली मुख्य मेहमान थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ। मुख्य यजमान डॉ. रमेश आर्य एवं अन्य महान् आर्य विभूतियों ने अग्नि में आहुतियाँ अर्पित कर जगत कल्याण की कामना की।

दीप प्रज्ज्वलन एवं डी.ए.वी. गान के पश्चात् उपसभा के प्रधान श्री जे.पी. शूर ने अपने उद्बोधन में डी.ए.वी. समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का उद्देश्य स्पष्ट किया और कहा कि लाला लाजपतराय ने अंग्रेज़ों का विरोध करते हुए अनेकों अत्याचार सहे। देश के लिए उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

मुख्यातिथि डॉ. रमेश आर्य ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि जिन लोगों ने देश को स्वतंत्र करवाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया उनके जीवन से युवा पीढ़ी को अवगत करवाना बहुत ही आवश्यक है। आज समाज जिन कुरीतियों का शिकार है उनसे त्राण पाने के लिए ऐसे महान् आदर्श पैदा करना डी.ए.वी. का लक्ष्य है।

डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा आर्य समाज एवं डी.ए.वी. के लिए किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम में बी.बी.के. डी.ए.वी. महिला कॉलेज, डी.ए.वी. इंटरनैशनल एवं डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने समधुर भजन प्रस्तुत कर वातावरण की भक्तिमय बना दिया। गुरु नानक देव डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भिखीविंड के छात्र–छात्राओं ने लाला लाजपत राय जी के जीवन पर आधारित दृश्य–श्रव्य नाट्य प्रस्तुति से देश के लिए उनके द्वारा किए

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 16 फरवरी 2020 से 22 फरवरी 2020

ब्रह्म- क्षत्र की श्री

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इदं मे ब्रह्म च क्षत्र, चोभे श्रियमश्नुताम् ।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां, तस्यै ते स्वाहा।।

यजु ३२.१६

ऋषिः **श्रीकामः**। देवता **देवाः (विद्वांसः राजानश्च)**। छन्दः **अनुष्टुप्** (शङ्क मती)।

● **(मे)** मेरा (इदं) यह **(ब्रह्म च क्षतं च)** ब्रह्मण–धर्म और क्षात्र–धर्म **(उभे)** दोनों **(श्रियं)** श्री को **(अश्नुतां)** प्राप्त हों। **(देवाः)** विद्वद्गण और राजा लोग **(मयि)** मेरे अन्दर **(उत्तमां श्रियं)** उत्तम श्री को **(दधतु)** स्थिर करें। **(तस्यै ते)** उस तुझ [श्री] के लिए **(स्वाहा)** स्वागत–वचन (है)।

● प्रत्येक राष्ट्र में ब्रह्म और क्षत्र दोनों का होना आवश्यक है। कोई भी राष्ट्र ज्ञान–विज्ञान के शिक्षक, आस्तिकता और सच्चरित्रता के प्रचारक, धर्म के उद्धारक ब्राह्मणों से धृत तथा राष्ट्र की रक्षा करनेवाले एवं अवसर आने पर राष्ट्र–हितार्थ अपना बलिदान तक कर देनेवाले वीर क्षत्रियों से रक्षित होता है। इन दोनों में से एक के भी अभाव में राष्ट्र का शरीर खड़ा रह सकना कठिन है। बड़े–बड़े बली और सैन्य–शक्ति में अग्रणी राष्ट्र ब्रह्म–बल के अभाव के कारण अपने शक्ति–प्रदर्शन की धुन में दूसरे राष्ट्रों के साथ युद्ध करके नष्ट–भ्रष्ट हो गये। इसके विपरीत अनेक शान्ति प्रिय और ज्ञान–विज्ञान के उपासक–राष्ट्र आत्म–रक्षा के साधन पास न होने से दूसरे राष्ट्रों द्वारा कवलित कर लिये गये।

राष्ट्र के समान व्यक्ति में भी ब्रह्म अर्थात ज्ञान–विज्ञान, ईश्वर–विश्वास, त्याग, अपरिग्रह आदि का गुण और क्षत्र अर्थात् क्षत से बचने–बचाने का तथा आत्म–रक्षा एवं पर–रक्षा का गुण, दोनों का होना अनिवार्य है। किसी एक के भी न होने पर व्यक्ति में न्यूनता रहती है, जिसके कारण वह उन्नत नहीं हो सकता। अतः मैं भी चाहता हूँ कि मेरे ब्रह्म और क्षत्र दोनों श्री को, उत्कर्ष को, परम शोभा को प्राप्त करें। मेरे राष्ट्र में जो भी देव हैं, धर्मात्मा विद्वद्गण हैं, अध्यापक –उपदेशक हैं, राजा और राज्यधिकारी हैं, वे सदुपदेश, शिक्षा और अपने आदर्श चरित्र के उदाहरण से मेरे अन्दर ब्रह्म और क्षत्र की परम श्री को सुदृढ़ रूप से स्थापित करें। ब्रह्म और क्षत्र के समन्वय से उत्पन्न होने वाली श्री मेरे लिए अतिशय स्पृहणीय है, जीवन के उत्कर्ष के लिए अनिवार्य रूप से वरणीय है। हे ब्रह्म–क्षत्र की श्री! तुम आओ, मेरे अन्तरात्मा में प्रवेश करो, तुम्हारा स्वागत है।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु दर्शन

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में महात्मा आनन्द स्वामी ने बताया कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों में आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना बतलाया है। इसका साधन भी उन्होंने बतलाया–"शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" आर्य समाज के नेताओं तथा सेवकों ने शारीरिक तथा सामाजिक उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न किया। समाज सुधार तथा देश उद्धार की अनेक योजनाएँ भी बनाई। राष्ट्र–निर्माण के लिए गुरुकुल, कॉलेज, स्कूल, पाठशालाएँ, अनाथालय, विधवाश्रम और शिल्प–विद्यालय खोल, पीड़ितों–दलितों की सहायता का काम किया। देश में अथवा विदेश में, इस समय जितने भी बड़े–बड़े आन्दोलन हैं, उनका ध्यान केवल शरीर की ओर है। आत्मा की उन्होंने सर्वथा अवहेलना की है। यही कारण है कि इतने पुरुषार्थ और परिश्रम के बाद भी संसार की नैया दुःख के सागर में डोल रही है।

–अब आगे...

हम सफलता तो चाहते हैं, परन्तु सफलता की कुञ्जी की ओर ध्यान नहीं देते। हम शान्ति चाहते है, परन्तु शान्ति के आधार को भुला दिया है, सफलता और शान्ति के वास्तविक साधन आत्म–दर्शन को भूलकर हम अन्य साधनों में व्यस्त हैं। यही कारण है कि इतने परिश्रम और पुरुषार्थ के बावजूद हम इस ध्येय से कोसों दूर हैं। न केवल दूर हैं, अपितु मार्ग से भटक गए हैं। शान्ति के नाम पर भीषण विनाशकारी शस्त्रास्त्र तैयार कर रहे हैं। संसार के समस्त वैज्ञानिकों का कुल ज्ञान और विज्ञान इस प्रयत्न में खर्च हो रहा है कि कम से कम समय में अधिक से अधिक प्राणियों का संहार हो सके। जो देश अपने आपको आधुनिक काल में सभ्यता और विज्ञान का नेता समझते हैं, वे देश भी आत्मा से विमुख होने के कारण अशान्ति, दुःख और कष्ट क्लेशों का कारण बन रहे हैं। भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा–

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतःसुखम्।। 2.33।।

"जिसकी बुद्धि प्रभु से युक्त नहीं है, ऐसे अयुक्त पुरुष में मन में स्थिरता नहीं होती और जिसका मन अशान्त है, उसे सुख कहाँ?"

केवल स्थिर–शान्त मन वाला व्यक्ति ही सुख–लाभ नहीं करता। अपितु समाज, राष्ट्र देश और समूचे संसार के लिए भी आवश्यक है कि वह सुख लाभ के लिए स्थिरता और शान्ति लाभ करें। जिन राज्यों में अस्थिरता है, अशान्ति है, असन्तोष है, वे न तो उन्नति कर सकते हैं और न सुख पा सकते हैं। इस तत्त्व को जाने बिना समाज सेवा, देश सेवा, राष्ट्र सेवा, परिवार सेवा कोई भी काम कर लीजिए, आपको कभी सिद्धि प्राप्त न होगी। अपने अनुभव के आधार पर मेरा यह अटल विश्वास है कि आत्म दर्शन तथा प्रभु दर्शन के सिवा सुख और शान्ति का कोई मार्ग नहीं है।

आत्म–दर्शन का महत्त्व और उसकी अनिवार्य आवश्यकता महर्षि दयानन्द ने "सत्यार्थप्रकाश" में वर्णन की है। महर्षि अपने इस महान् ग्रन्थ के छठे समुल्लास में लिखते हैं–

"(राज्य के) सब सभासद् और सभापति (मन्त्री और प्रधानमंत्री) इन्द्रियों को जीत के अर्थात् अपने वश में रख के सदा धर्म में वर्तें और अधर्म से हटे–हटाए रहें। इसलिए रात–दिन नियत समय में योगाभ्यास भी करते रहें क्योंकि जो जितेन्द्रिय कि अपनी इन्द्रियों (जो मन, प्राण और शरीर–रूपी प्रजा है इस) को जीते बिना बाहर की प्रजा को अपने वश में स्थापन करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।"

स्पष्ट शब्दों में ऋषि ने राजनीति में भाग लेने वालों, राज्य मन्त्रियों, प्रधानमन्त्रियों और राष्ट्रपति को भी आत्मदर्शी, योगाभ्यासी तथा जितेन्द्रिय होने का आदेश दिया है। आज भारत स्वतंत्र है और स्वतंत्र देश होना चाहिए, परन्तु इसकी दुःख की मात्रा कुछ बढ़ ही गई है। यदि राज्य–कर्मचारी योगाभ्यासी और प्रभु के प्यारे हों, तो फिर यहां वास्तविक रामराज्य स्थापित हो सके। अभी तो सब लोग माया के पीछे भाग रहे हैं। उन्हे केवल शरीर का ध्यान है। आत्मा लोप हो गया है। महाभारत के शान्ति पर्व में उनतीसवें अध्याय में राम राज्य का जो वर्णन किया गया है वह इस प्रकार हैं–

विधवा यस्य विषये नाऽनाथाः कश्चिन्नामवन्।

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

महर्षि दयानन्द का अतिथियज्ञ चिन्तन

● डॉ. आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती अप्रतिहतगतिक ज्ञान के धनी, अप्रतिम विद्वान् थे। स्वामी जी ने प्रत्येक क्षेत्र में, **शिक्षा, व्याकरण, वेद, विज्ञान व्यवहार, धर्म, कर्म** आदि के परिज्ञान में विशिष्ट महत्त्वपूर्ण विचार, चिन्तन प्रदान किये हैं। वैदिक संस्कृति के आधार **पञ्चयज्ञों** पर भी अद्भुत चिन्तन प्रदान किया है।

पञ्चयज्ञों में **अतिथियज्ञ** भी महत्त्वपूर्ण यज्ञ है। अतिथियज्ञ के तात्पर्य फल आदि का स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने छोटे बड़े अपने सभी ग्रन्थों में विवेचन किया है। व्याकरण के ग्रन्थों में **उणादिकोष** भी एक विशिष्ट ग्रन्थ है, जिसकी परिगणना **पाणिनि** महर्षि के **पञ्चोपदेशों** में होती है। उणादिकोष में **अतिथि** शब्द की व्युत्पत्ति करते हुये स्वामी जी लिखते हैं–

अत्+ इथिन् = अतति निरन्तरं गच्छति भ्रमतीति अतिथिः।

अकस्मात् आगतः सज्जनो वा।

न विद्यते नियता तिथिरस्येति व्युत्पत्यन्तरम्।

स्वामीदयानन्दव्याख्या उणा. 4/2।।

अर्थात् जो निरन्तर गति करता है, घूमता है, उसे अतिथि कहते हैं, अकस्मात् आये हुये सज्जन को अतिथि कहते हैं अथवा जिसके आने की कोई तिथि नहीं होती, उसे अतिथि कहते हैं।

आर्योद्देश्यरत्नमाला लघु पुस्तिका में स्वामी जी ने 100 परिभाषायें की हैं। उनमें **अतिथि** शब्द की परिभाषा इस प्रकार की है–

जिसकी आने और जाने में कोई भी निश्चित तिथि न हो, तथा जो विद्वान् होकर सर्वत्र भ्रमण करके प्रश्नोत्तरों के उपदेश से सब जीवों का उपकार करता है, उसको अतिथि कहते हैं।

आर्योद्देश्यरत्नमाला 63।।

स्वामी जी महाराज ने अतिथि की इस परिभाषा में अतिथि के गुणों व कर्त्तव्यों का निदर्शन किया है कि अतिथि वह है जो विद्यावान् होकर भ्रमण करते हुये उपदेश देता है एवं जीवों का मार्गदर्शन करता है।

सत्यार्थप्रकाश के **चतुर्थ समुल्लास** में **अतिथि विद्वान्** का वैशिष्ट्य निर्दिष्ट करते हुये **स्वामी दयानन्द** लिखते हैं –

जब तक उत्तम अतिथि जगत् में नहीं होते, तब तक उन्नति भी नहीं होती। उनके सब देशों में घूमने और सत्योपदेश करने से पाखण्ड की वृद्धि नहीं होती और सर्वत्र गृहस्थों को सहज से सत्यविज्ञान की प्राप्ति होती रहती है और मनुष्यमात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है। बिना अतिथियों के सन्देह निवृत्ति नहीं होती। सन्देह निवृत्ति के बिना दृढ़ निश्चय भी नहीं होता, निश्चय के बिना सुख कहाँ।

सत्या. चतुर्थ. पृ. 96।।

स्वामी जी महाराज के अतिथि वैशिष्ट्य के इन वचनों से सुस्पष्ट है कि अतिथि जगत् की उन्नति करने वाले होते हैं, सत्य की स्थापना करते हैं, पाखण्ड का नाश करते हैं, गृहस्थियों को विज्ञान का ज्ञान देते हैं, एक धर्म की स्थापना करने वाले होते हैं, सन्देह निवारक होते हैं, एवं सुख देनेवाले होते हैं।

अतिथियों के इस वैशिष्ट्य के कारण **पञ्चमहायज्ञों** में इस यज्ञ की गणना है। अतिथियज्ञ का तात्पर्य है–

अतिथये यज्ञः इति अतिथियज्ञः।

अतिथि के साथ संगतिकरण, मेल, मिलाप किया जाना, उसकी सेवा करना अतिथियज्ञ कहाता है।

अतिथियों की सेवा से सुख होता है। **महर्षि दयानन्द** कहते हैं–

यत्रातिथीनां सेवनं यथावत् क्रियते तत्र सर्वाणि सुखानि भवन्तीति।।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पञ्चमहा. पृ. 298।।

जहाँ अतिथियों का यथोचित् सेवन होता है, सेवा होती है, वहाँ सभी सुख होते हैं।

अतिथियों की सेवा कैसे की जाये, इसका निर्देश करते हुये वेद के शब्दों में स्वामी जी कहते हैं –

स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद्व्रात्य क्वाऽवात्सीर्व्रात्योदकं व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्तु।....।।

अथर्व. 15/11/2।।

गृहस्थ लोग ऐसे पुरुष को आते देखकर बड़े प्रेम से उठकर, नमस्कार करके, उत्तम आसन पर बिठाएँ। पश्चात् पूछें कि आपको जल अथवा किसी अन्य वस्तु की इच्छा हो सो कहिये। और जब वे स्वस्थचित्त हो जाएँ, तब पूछें कि **व्रात्य क्वावात्सीः=** हे व्रात्य! अर्थात् उत्तम पुरुष, आपने कल के दिन कहाँ वास किया था? **व्रात्योदकम्=** हे अतिथे! यह जल लीजिये और **व्रात्य तर्पयन्तु=** हमको अपने सत्य उपदेश से तृप्त कीजिये, कि जिससे हमारे इष्ट मित्र लोग सब प्रसन्न होकर आपको भी सेवा से संतुष्ट रखें।

ऋ. भा. भू. पृ. 299।।

स्वामी जी महाराज ने अतिथियज्ञ के करने का प्रकार बताया है, वहीं उन्होंने यह भी निर्देश किया है कि पाखण्डी, ढोंगी अतिथियों से सदा बचें। इस प्रसंग में मनु महाराज का श्लोक उपस्थित किया है। वह श्लोक है –

पाषण्डिनो विकर्मस्थान्बैडालव्रतिकाञ्छठान्।

हैतुकान्बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापि नार्चयेत्।।

मनु. 4/30।।

इस श्लोक का अर्थ करते हुये सत्यार्थप्रकाश में स्वामी जी लिखते हैं–

पाषण्डी अर्थात् वेदनिन्दक वेदविरुद्ध आचरण करने हारे **विकर्मस्थ=** जो वेदविरुद्ध कर्म का कर्त्ता, मिथ्या भाषणादियुक्त, **बैडालिक वृत्ति=** जैसे बिडाल छिप और स्थिर रहकर ताकता ताकता छपट से मूषें आदि प्राणियों को मार, अपना पेट भरता है, वैसे जनों का नाम **बैडालवृत्ति**, शठ अर्थात् हठी, दुराग्रही, अभिमानी, आप जाने नहीं औरों का कहा माने नहीं, **हैतुक** कुतर्की व्यर्थ बकने वाले जैसे कि आजकल के वेदान्ती बकते हैं 'हम ब्रह्म और जगत् मिथ्या है वेदादिशास्त्र और ईश्वर भी कल्पित है' इत्यादि गपोड़ा हाँकने वाले **बकवृत्ति=** जैसे बगुला एक पैर उठा ध्यानावस्थित के समान होकर झट मच्छी के प्राण हरकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता है, वैसे आजकल के वैरागी और खाकी आदि हठी दुराग्रही वेदविरोधी हैं, ऐसे का सत्कार वाणी मात्र से भी न करना चाहिये।

सत्या. चतुर्थ., पृ. 95।।

स्वामी जी महाराज के अतिथि यज्ञ सम्बन्धी ये विशिष्ट विचार कल्याणकारक एवं जीवन को उन्नत करने वाले हैं। स्वामी जी के इन विचारों का अनुपालन कर प्रत्येक गृहस्थ परिवार, समाज व जीवन को आनन्दमय करने में समर्थ हो सकते हैं, और सर्वत्र एक धर्म स्थापित किया जा सकता है।

प्राचार्या– पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी–10
आचार्या–आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, सिरोही 307027 (राज़)

शिव रात्रि बोध किरण जगी बन गई, क्रान्ति की जो ज्वाला

शिव रात्रि बोध से पल में, पाखण्ड पराजय पाई।
शिव निशा उषा वह लाई, हर दिशा ज्योति मुस्काई।।

रजनी के गहन अंधेरे में, अज्ञान अन्ध का नाश हुआ।
प्रतिमा का वन्दन बन्द हुआ, सच्चे ईश्वर का भास हुआ।
फल–मिष्ट ग्रहण कर चूहों ने, जड़ पर चेतन की विजय वरी,
शिव रात्रि रश्मि लेकर आई, शत शत स्वर्णिम इतिहास हुआ
थे धन्य बाल मूल शंकर चैतन्य तेज तरूणाई।
शिव निशा उषा वह लाई, हर दिशा ज्योति मुस्काई।।

शिव रात्रि बोध की किरण जगी, बन गयी क्रान्ति की जो ज्वाला।
थी एक मूर्ति पूजा ही क्या, पाखण्ड मिला जो भी काला।
प्रत्येक दोष अध आडम्बर, हो गया भस्म अंगारों में,
फिर जगा जगत् में नव प्रभात, लेकर वेदों का उजियाला।
ऋषि दयानन्द ऋषिवर से, नभ सूर्य शक्ति शरमाई।
शिव निशा उषा वह लाई, हर दिशा ज्योति मुस्काई।।

तरु त्रैतवाद का फल लाया, कर कर्म योग संचार हुआ।
खिल गयी कली वर्णाश्रम की, गुरु गर्व जन्म का क्षार हुआ।
शास्त्रार्थ घोषणा के द्वारा, ऋषिवर ने विशद् विवेक दिया,
आवरण पुराणों का टूटा, फिर से वैदिक विस्तार हुआ।
नारी तल से तिलक बनी, गूँजी सुख की शहनाई।
शिव निशा उषा वह लाई, हर दिशा ज्योति मुस्काई।।

देवनारायण भारद्वाज
"देवातिथि" रामघाट मार्ग, अलीगढ़

स्वामी दयानन्द सरस्वती

● स्मृति शेष डॉ. भवानीलाल भारतीय

पिछली शताब्दी में भारत में नवीन जागरण का एक प्रबल आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था। इस धार्मिक और सांस्कृतिक जागृति के सूत्रधार–महापुरुषों में दयानन्द सरस्वती का नाम प्रमुख है। उन्होंने पराधीनता के पाशों में बँधे देशवासियों को स्व–धर्म, स्व–भाषा, स्व–संस्कृति तथा स्वदेश–प्रेम का पाठ पढ़ाया, उन्हें अपने गौरव की पहचान करके एक सुखद भविष्य के निर्माण की प्रेरणा दी।

दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात के काठियावाड़ प्रदेश की एक छोटी–सी देशी रियासत मोरवी के ग्राम टंकारा में हुआ। उनके पिता करसनजी लालजी तिवारी औदीच्य ब्राह्मण थे। उनके परिवार में शिवोपासना को प्रमुखता प्राप्त थी। स्वामी दयानन्द का बचपन का नाम मूलशंकर था। वे अपने पिता की सबसे बड़ी सन्तान थे। उनका जन्म 1824 ई. में हुआ।

बचपन में मूलशंकर के जीवन में एक–दो घटनाएँ ऐसी घट गई, जिनके कारण उनका भावी जीवन एक नवीन मोड़ ले सका। वे अपने प्रबल आन्दोलन के द्वारा देश, समाज तथा सम्पूर्ण मानवता के हित में जुटे रहे।

अभी वह किशोर थे कि पिता के आदेश पर उन्होंने शिवरात्रि को उपवास किया। रात्रि–जागरण के लिए वे पास के एक शिवालय में गए। वहीं उन्हें मूर्तिपूजा की निस्सारता का ज्ञान हुआ। एक चूहे को शिव–प्रतिमा पर स्वच्छन्द रूप से क्रीड़ा करते देखकर उन्होंने जान लिया कि सच्चिदानन्द–स्वरूप पर–परमात्मा कोई और है। जड़ मूर्त्ति बनाकर उसकी पूजा करना ईश्वर–प्राप्ति का साधन नहीं हो सकता। अपनी छोटी बहन और प्रिय चाचा की असामयिक मृत्यु ने भी, उन्हें जीवन और मृत्यु के रहस्य पर चिन्तन करने के लिए विवश किया। तब उन्हें सांसारिक जीवन से विरक्ति हो गई। एक दिन वे अपने गृह–परिवार तथा माता–पिता को त्यागकर वैराग्य पथ के पथिक बन गए।

कुछ काल तक ब्रह्मचारी के रूप में गुजरात में भ्रमण करने के बाद उन्होंने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली। अब वे दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। कुछ समय तक वे योग–साधना तथा शास्त्रों के अध्ययन में लगे रहे। उनका अनुमान था कि हिमालय पर्वत की चोटियों पर अवश्य ही उच्च कोटि के योगी, साधक तथा अध्यात्म–विद्या के ज्ञाता साधुगण रहते होंगे। जिज्ञासु दयानन्द इन्हीं योगी साधकों की तलाश में उत्तराखण्ड के दुर्गम वन–पर्वतों में पर्याप्त समय तक भ्रमण करते रहे, किन्तु उन्हें इच्छित सफलता नहीं मिली। इसके विपरीत उन्होंने देखा कि तीर्थों, मंदिरों, देवस्थानों आदि में पाखण्ड और आडम्बर का बोलबाला है। तब वे हिमाचल की चोटियों से उतर आए और नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश में भ्रमण करते रहे। यहीं पर उन्हें मथुरा में निवास करनेवाले एक नेत्रहीन संन्यासी का परिचय प्राप्त हुआ, जो संस्कृत–विद्या के प्रकाण्ड पण्डित थे। व्याकरण–शास्त्र का उन्हें तलस्पर्शी ज्ञाता माना जाता था।

स्वामी दयानन्द 1860 में मथुरा आए। लगभग ढाई वर्षों तक प्रज्ञाचक्षु (नेत्रहीन) संन्यासी स्वामी विरजानन्द के छात्र के रूप में रहे। उनसे व्याकरण, निरुक्त, वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन करते रहे। जब उनका अध्ययन समाप्त हुआ, तो गुरु विरजानन्द ने उनसे गुरुदक्षिणा में प्रतिज्ञा कराते हुए वचन लिया कि वे अपना शेष जीवन वेद–विद्या का प्रचार करने, ऋषि–ग्रन्थों के पठन–पाठन, साम्प्रदायिकता के उन्मूलन तथा देशवासियों में राष्ट्रभक्ति के भावों का प्रचार करने में लगाएँगे। स्वामी दयानन्द ने मौन भाव से गुरु के आदेश को स्वीकार किया और कार्यक्षेत्र में उतर पड़े।

प्रारम्भ में उन्होंने गंगा के तटवर्ती प्रान्तों में भ्रमण करके लोगों को वैदिक धर्म के मूलभूत तत्त्वों की शिक्षा दी। संध्या, अग्निहोत्र, गायत्री–जप आदि वैदिक उपासना–प्रणाली का महत्त्व बताया। वेद–विरुद्ध मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक–श्राद्ध आदि से अलग रहने का उपदेश दिया। उन्होंने काशी, फर्रुखाबाद, कानपुर आदि अनेक नगरों में पुराणपन्थी पण्डितों से शास्त्रार्थ किये। मूर्तिपूजा की अवैदिकता सिद्ध की।

1872 के दिसम्बर मास में स्वामी दयानन्द ब्रह्मसमाज के नेता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर तथा अन्य प्रबुद्ध बंगालियों के निमंत्रण पर कलकत्ता गए। पर्याप्त काल तक उन्होंने वहाँ निवास किया। इस अवधि में उन्हें बंगाल के उस शिक्षित भद्रलोक का परिचय मिला जो उन दिनों भारत में धार्मिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक जागृति के कार्य में लगे हुए थे। देवेन्द्रनाथ ठाकुर के अतिरिक्त केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस आदि प्रतिष्ठित बंगाली महानुभावों से उनकी भेंट हुई। धर्म, समाज तथा राष्ट्र की व्यापक सेवा के लिए क्या–कुछ किया जाना चाहिए–यह सब सोचने का उन्हें अवसर भी मिला।

1875 में जब वे बम्बई में थे, उन्होंने अपने शिष्यों के आग्रह से उस विश्व–प्रसिद्ध आन्दोलन की नींव रखी जो 'आर्यसमाज' के नाम से विख्यात हुआ। यद्यपि आर्यसमाज का आरम्भ महाराष्ट्र की राजधानी बम्बई में हुआ था, किन्तु उसके आदर्श और उपदेशों को स्वीकार करने में हिन्दी–भाषी प्रान्तों के लोग बहुत बड़ी संख्या में आगे आए। पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार आदि प्रान्तों में आर्यसमाज का व्यापक प्रचार हुआ। मात्र 59 वर्ष की आयु में स्वामी दयानन्द का 30 अक्तूबर 1883 को अजमेर में निधन हो गया।

स्वामी दयानन्द ने वैदिक संस्कृति का पुनरुत्थान किया। भ्रमवश कुछ लोग उन्हें धार्मिक नेता समझते हैं। स्वामी दयानन्द भी धार्मिक ही थे, परन्तु उनका धर्म वैदिक निष्ठा का था। वेद केवल मनुष्यता के धर्म में विश्वास करते हैं। वेदों में हिंदू–मुस्लिम आदि मत–मतांतरों की व्याख्या नहीं है।

अपने विस्तृत अध्ययन और शास्त्र–ज्ञान के द्वारा वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि आर्य जाति के सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ वेदों में जिन शिक्षाओं का उल्लेख है, वे देश, जाति, वर्ग, सम्प्रदाय आदि की सीमाओं से परे है। उनमें समूची मानव–जाति को ऊँचा उठाने की क्षमता है। इसीलिए उन्होंने वेदों को आर्य जाति का प्रधान धर्म–ग्रन्थ प्रतिपादित किया। वेदों के अनुसार ही अपने जीवन का निर्माण करने के लिए देशवासियों को प्रेरित किया। उनकी दृढ़ धारणा थी कि वेदों में एक ही परमात्मा की पूजा–उपासना का विधान है। वेदों में जो तथ्य उल्लिखित हैं, वे सत्य–विद्याओं और विज्ञानमूलक शिक्षाओं पर ही आधारित है, अतः यदि वैदिक आदर्शों को हम स्वीकार कर लें तो हमारी सर्वविध उन्नति होगी।

स्वामी दयानन्द समाज में व्याप्त कुरीतियों और कदाचारों से भी पूर्णतया परिचित थे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन करने के लिए जबरदस्त प्रयास किये। उन्हीं के सामाजिक सुधार के उपदेशों का परिणाम है कि बाल–विवाह बंद हुए, अनमेल विवाहों पर रोक लगी, वृद्ध–विवाह घृणा की दृष्टि से देखे जाने लगे, तथा कम आयु की विधवाओं के पुनर्विवाह को सामाजिक स्वीकृति मिली।

स्वामी दयानन्द के अनुसार, आर्यों का वर्ण–विधान जन्मगत जाति पर आधारित नहीं है, अपितु गुण, कर्म और स्वभाव से ही किसी मनुष्य के ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि होने का निश्चय किया जाना उचित है। उनकी इस शिक्षा से जन्म–जाति के बंधन शिथिल हुए, विवाह में जाति की अपेक्षा वर–वधू के गुण, रूप, शील आदि को देखा जाने लगा। नारी–शिक्षण, अछूतोद्धार तथा समतामूलक समाज की स्थापना में महर्षि दयानन्द के योगदान को सभी इतिहासकारों तथा समाजशास्त्रियों ने एकमत से स्वीकार किया है।

जिस प्रकार आर्ष–ग्रन्थों, आप्त–वचनों और वेदानुकूल शास्त्रों को पढ़ना–पढ़ाना स्वामी दयानन्द मनुष्य का प्रथम धर्म मानते थे, उसी प्रकार राष्ट्र की उन्नति के लिए पुरुषार्थ करना उनकी दृष्टि में परम धर्म था। यद्यपि वे संन्यासी थे जिनके लिए सांसारिक सफलताएँ थोड़ा भी महत्त्व नहीं रखतीं, तथापि उनमें स्वदेश के प्रति दिव्य प्रेम तथा भक्ति थी। वे यह अनुभव करते थे कि विदेशी शासकों के अधीन हो जाने के कारण, आर्यावर्त जैसे गौरवशाली राष्ट्र की कैसी अधोगति हो गई है। उन्होंने देशवासियों को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया और 'स्वदेशी' तथा 'स्वराज' का मंत्र दिया। दयानन्द ही पहले भारतीय थे, जिन्होंने स्पष्ट घोषणा करते हुए कहा चाहे कोई कितना ही करे, किन्तु स्वदेशी राज्य सर्वोपरि उत्तम होता है, किन्तु विदेशियों का राज्य, चाहे वह मत–मतान्तर के आग्रह से रहित हो–न्याय तथा पक्षपातरहित हो–अथवा माता–पिता के तुल्य वात्सल्यभाव से परिपूर्ण भी क्यों न हो–हमें कदापि काम्य नहीं है।

स्वामी दयानन्द इस शताब्दी के पहले भारतीय थे जिन्होंने अंग्रेज़ों का शासन होने पर भी, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर सुशोभित किया। उनका विचार स्पष्ट था कि राष्ट्रभाषा हमें राष्ट्रीय संस्कृति से जोड़ती है। स्वयं गुजराती होते हुए भी, स्वामी जी ने अपने व्याख्यान हिन्दी में दिये। उन्होंने अधिकांश ग्रन्थ भी हिन्दी में ही लिखे। देशवासियों को स्वदेशी वस्त्रों तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की प्रेरणा दी।

स्वामी दयानन्द की शिक्षाएँ लोकहित से अनुप्राणित थीं, इसीलिए देशवासियों ने उन्हें उन्मुक्त भाव से स्वीकार किया। उनके सिद्धान्तों और कार्यों की प्रशंसा स्वदेश में तो हुई ही, अन्य देशों के प्रबुद्ध लोग भी उनके प्रगतिशील विचारों से प्रभावित हुए।

राष्ट्र–जागरण में स्वामी दयानन्द की महत्त्वपूर्ण भूमिका का सही मूल्यांकन तब तक सम्भव नहीं है, जब तक उनके बहु–आयामी व्यक्तित्व को अच्छी प्रकार से समझा नहीं जाता। वे परम्परा और प्रगति को साथ लेकर चलनेवाले भविष्यद्रष्टा महापुरुष थे।

8/423 नन्दन वन
जोधपुर, राज.

वेदमाता गायत्री

● डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री

चतुर्थवेद अथर्ववेद में प्रत्यक्षतः गायत्री मन्त्र नहीं है, किन्तु परोक्ष रूप से गायत्री मन्त्र का संकेत इस मन्त्र में दिया गया है–

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं: प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।
–अथर्व. 19/71/1

अर्थ–(**मया**) मैंने (**वरदा**) वरों=इष्टकामनाओं को देने वाली (**वेद–माता**) गायत्री (**स्तुता**) अभिष्टुता=स्वभ्यस्ता अर्थात् अच्छी प्रकार से जपी।(**द्विजानाम्**) द्विजों को (**पावमानी**) पवित्र करने वाली गायत्री (**प्रचोदयन्ताम्**) [पूजार्थे बहुवचनम्। **प्रचोदयतां**=प्रेरयताम्] अर्थात् हमारी बुद्धियों को प्रेरणा देने वाली बने जैसा गायत्री मन्त्र में है–'**धियो या नः प्रचोदयात्**'। और हे गायत्री! (**मह्यम्**) मेरे लिए इस लोक में आयु:, प्राण, पशु, कीर्ति, द्रविण=धन और ब्रह्मतेज को (**दत्त्वा**) देकर (ब्रह्मलोकम्) मोक्षधाम को (**व्रजत**) [पूर्ववत् पूजार्थे बहुवचनम्। व्रज=गमय=प्रापय] अर्थात् मुझे पहुँचा दो।

इस मन्त्र में 'वेदमाता' शब्द से गायत्री मन्त्र का ग्रहण होता है, इसमें निम्नलिखित प्रमाण हैं–

1. अथर्ववेद के ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण में वेदमाता का अर्थ गायत्री=सावित्री किया गया है–'**यश्चैव विद्वान् एवमेतां वेदानां मातरंसावित्री–सम्पदम् उपनिषदमुपास्ते**'। (गोपथब्राह्मण पूर्वभाग 1/38)

गोपथ ब्राह्मण के पूर्वभाग में ओंकार और गायत्री के महत्त्व का विस्तार से वर्णन किया गया है।

गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद का ब्राह्मण है और इस ब्राह्मण में 'वेदमाता' गायत्री को बताया गया है। अतः वेदमाता नाम से गायत्री का ग्रहण उचित समझना चाहिए।

2. 'अथर्ववेद–सर्वानुक्रमणी' में इस मन्त्र का देवता 'गायत्री' बताया गया है। इससे स्पष्ट है कि सर्वानुक्रमणीकार इस मन्त्र का गायत्री परक अर्थ स्वीकार करते हैं।

3. गायत्री मन्त्र के अनेक पर्यायवाची नाम हैं। जैसे–गायत्री, सावित्री, वेदमुख, वेदमाता, गुरुमन्त्र, कामधेनु और मन्त्रराज आदि। गायत्री के पर्याय 'वेदमाता' के सम्बन्ध में 'गायत्री मीमांसा' ग्रन्थ के लेखक डॉ. शिवपूजन सिंह कुशवाह लिखते हैं–'वेदमाता–उपनिषत्काल में गायत्री का माहात्म्य इतना अधिक बढ़ गया था कि लोग 'गायत्री' को 'वेद की माता' या 'छन्दों की माता' कहने लग गये थे।' अथर्ववेद काण्ड 19 सूक्त 71 मन्त्र 1 में भी इसे 'वेदमाता' कहा गया है। (गायत्री मीमांसा, पृष्ठ 9, प्रकाशक श्रीमद्दयानन्द वैदिक शोधसंस्थान, ज्वालापुर–249407, द्वितीय संस्करण, 1987 ई.) ज्ञातव्य है कि अथर्ववेद 19/71/1 में पूर्वोक्त उद्धृत '**स्तुता मया वरदा वेदमाता...** ' मन्त्र है, जिसका अर्थ सहित उल्लेख ऊपर किया गया है।

4. सामवेद उत्तरार्चिक 1462 पर गायत्री मन्त्र है, जिसका अर्थ करते हुए चतुर्वेद भाष्यकार पं. जयदेव शर्मा विद्यालङ्कार मीमांसातीर्थ ने प्रारम्भ में ही लिखा है, '**ब्रह्मगायत्री, गुरुमन्त्र, वेदमाता सावित्री आदि।...** ' (सामवेद संहिता भाषाभाष्य, पृष्ठ 633, संवत् 2003 विक्रमीय, तृतीयावृत्ति, आर्य साहित्य मण्डल लि., अजमेर) अतः स्पष्ट है कि गायत्री मन्त्र का अपर नाम वेदमाता है अतः अथर्ववेद के 19/71/1 मन्त्र में आये 'वेदमाता' शब्द का 'गायत्री मन्त्र' अर्थ किया जा सकता है।

5. सामवेद (1462) में 'तत्सवितुर्वरेण्यं... ' यह प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र आता है। इसकी व्याख्या में पण्डित हरिशरण जी सिद्धान्तालङ्कार लिखते हैं– "यह मन्त्र गायत्री छन्द में होने से गायत्री नाम से ही प्रसिद्ध है, मनु ने इसे वेदों का सारभूत माना है... यह मन्त्र वेदों का सार है सो वेदों का निचोड़ यही तो हुआ कि...।"

('सामवेद भाषाभाष्य' उत्तरार्चिक, पृष्ठ 776, प्रथम संस्करण, 1973 ई. प्रकाशक–आर्यसमाज 1/248, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली–110022) अर्थात् गायत्री मन्त्र वेदों का सार है और मनु ने भी इसे वेदों का सारभूत माना है। अतः वेदों के सार=निचोड़=सारभूत मन्त्र को 'वेदमाता' कहना उपयुक्त है फलतः अथर्ववेद का '**स्तुता मया वरदा वेदमाता...**' 19/71/1 मन्त्र गायत्री मन्त्र का उपलक्षक है। अतः अप्रत्यक्ष रूप से (परोक्षतः) गायत्री मन्त्र का वर्णन अथर्ववेद भी करता है। ऋषि दयानन्द ने पञ्चमहायज्ञविधि में गायत्री मन्त्र के अन्त में लिखा है–**एवं चतुर्षु वेदेषु समानो मंत्रः** अर्थात् चारों वेदों को देखने से पता चलता है कि एक यही समान शब्द वाली गायत्री है इससे भिन्न कोई गायत्री चारों वेदों में नहीं है।

'वैदिक पथ' से साभार

मूर्तिपूजा भारतवर्ष के सारे अनिष्टों का मूल

● बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

मूर्तिपूजा ने भारत के अकल्याण की जो सामग्री एकत्र की है, उसे लेखनी लिखने में असमर्थ है। मूर्तिपूजा ने भारतवासियों का जो अनिष्ट किया है उसे प्रकट करने में हमारी अपूर्ण–विकसित भावप्रकाशक–शक्ति अशक्त है।

जो धर्म संपूर्ण भाव से आन्तरिक वा आध्यात्मिक था उसे संपूर्ण रूप से बाह्य किसने बनाया? – मूर्तिपूजा ने।

कामादि शत्रुओं के दमन और वैराग्य के साधन के बदले तिलक और त्रिपुण्ड्र किसने धारण कराया? – मूर्तिपूजा ने।

ईश्वर–भक्ति, ईश्वर–प्रीति, परोपकार और स्वार्थ–त्याग के बदले अंग में गोपीचन्दन का लेपन, मुख में गंगालहरी का उच्चारण, कण्ठ में अनेक प्रकार की मालाओं का धारण किसने सिखाया? – मूर्तिपूजा ने।

संयम, शुद्धता, चित्त की एकाग्रता आदि के स्थान में त्रिसीमा (धारणा, ध्यान, समाधि) में प्रवेश न कर, केवल दिन–विशेष पर खाद्य–विशेष का सेवन न करना; प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल में अलग–अलग वस्त्रों के पहनने का आयोजन और तिथि–विशेष पर मनुष्य–विशेष का मुख देखना तो दूर रहा उसकी छाया तक का स्पर्श न करना, यह सब किसने सिखाया?– मूर्तिपूजा ने।

हिन्दुओं के चित्त से **स्वाधीन–चिन्तन की शक्ति किसने हरण की? – मूर्तिपूजा ने।**

हिन्दुओं के मनोबल, वीर्य, उदारता और सत्साहस को किसने दूर किया? – मूर्तिपूजा ने।

प्रेम, संवेदना और परदुःखानुभूति के बदले धोरतम स्वार्थपरता को हिन्दुओं के चरित्र में कौन लाई? – मूर्तिपूजा।

हिन्दुओं को अमानुष, अपितु पशुओं से भी अधम किसने बनाया? – मूर्तिपूजा ने।

आर्यावर्त के सैकडौं टुकड़े किसने किये? – मूर्तिपूजा ने।

आर्य जाति को सैकड़ों सम्प्रदायों में किसने बाँटा? – मूर्तिपूजा ने।

आर्य जाति को सैकड़ों वर्षों से पराधीनता की लोहमयी शृंखला में किसने जकड़ रखा है? – मूर्तिपूजा ने।

कौन–सा अनर्थ है जो – मूर्तिपूजा द्वारा सम्पादित नहीं हुआ?

सच्ची बात तो यह है कि आप चाहे हाईकोर्ट के न्यायाधीश हों, चाहे गवर्नर (लाट) साहब के प्रधानतर सचिव, आप बुद्धि में बृहस्पति के तुल्य हों, चाहे वाग्मिता में सिसरो और गेटे से भी बढ़कर, आप अपने देश में पूजित हों अथवा विदेश में, आपकी ख्याति का डंका बजा हो, आप सरकारी कानून को पढ़कर सब प्रकार से अकार्य और कुकार्य को आश्रय देनेवाले अटर्नी कुल के उज्ज्वल रत्न हों, चाहे मिष्टभाषी, मिथ्योपजीवी सर्वप्रधान, स्मार्त्त (वकील); परन्तु यदि किसी अंश में भी आप मूर्तिपूजा का समर्थन करेंगे, तो हमें यह कहने में अणुमात्र भी संकोच नहीं होगा कि आप किसी भी अंश में भी भारतवर्ष के मित्र नहीं हो सकते, क्योंकि मूर्तिपूजा भारतवर्ष के सारे अनिष्टों का मूल है।

(मूल लेखक – पंडित श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, ग्रन्थ – "महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन–चरित", प्रकाशक – गोविन्दराम हासानन्द, 2050 वि. स. प्रथम संस्करण, पृष्ठ 27, प्रस्तुतकर्ता – भावेश मेरजा)

☞ पृष्ठ 02 का शेष

प्रभु दर्शन

सदैवासीत्पितृसमो रामो राज्यं यदन्वशात्।। 52।।
कालवर्षी च पर्जन्यः सस्यानि समपादयत्।
नित्य सुभिक्षमेवासीद्रामे राज्यं प्रशासति।। 53।।
प्राणिनो नाप्सु मज्जन्ति नान्यया पावकोऽदहत्।।
रुजा भयं न तत्रासीद्रामे राज्यं प्रशासति।। 54।।

"श्री रामचन्द्र जी के राज्य शासन में कोई स्त्री विधवा नहीं थी। कोई अनाथ न था। समय पर वर्षा होती थी। अन्न भी यथासमय होते थे। उनके राज्य में किसी प्रकार का दुर्भिक्ष नहीं हुआ। किसी की पानी में डूबकर या आग में भस्म होकर मृत्यु नहीं होती थी और न किसी अन्य प्रकार का रोग फैलता था।

इसका मूल कारण यही था कि भगवान् राम के राज्य में ब्रह्मज्ञानी, योगाभ्यासी, आत्मदर्शी अधिकारी, राज्य–प्रबन्ध करते थे।

इसी प्रकार छान्दोग्य उपनिषद् में कैकय प्रदेश के राजा अश्वपति का वर्णन आता है, जिससे ब्राह्मण और ऋषि लोग परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

ऋषि बोधोत्सव

● भद्रसेन

आर्य समाज शिवरात्रि को ऋषिबोधोत्सव के रूप में मनाता है। इस पर एक स्वाभाविक प्रश्न उभरता है, कि शिव शब्द का जब सीधा–सा अर्थ है–कल्याण, सुख और रात्रि = रात। तब प्रचलित परम्परा से यहाँ क्या विशेष अभिप्राय है? और इस शब्द तथा अर्थ का परस्पर क्या कोई तालमेल है? शिवरात्रि इस समस्त पद से एक और प्रश्नमाला यह भी पनपती है, कि यहाँ इन दोनों समस्तों का क्या तात्पर्य है तथा यह पर्व, व्रत–रात को ही क्यों आयोजित किया जाता है? जबकि बहुत सारे भारतीयों के घरों तथा दुकानों में शिव का एक अनोखा–सा चित्र भी देखने में आता है। जिस आलंकारिक रूप में शिव की जटाओं से गंगा प्रवाहित हो रही है, मस्तिष्क के ऊपरी भाग पर चन्द्रमा चमक रहा है तथा नीचे एक तीसरी आँख भी है। जिसके गले में विषधर सर्प लिपटे हुए हैं इत्यादि।

जब शिवपुराण चर्चित इन भावनाओं के साथ अनेक वर्षों से शिवरात्रि मनाई जा रही थी, तो 1838 में गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम में एक ऐतिहासिक घटना घटी।

पिता जी की प्रेरणा पर 14 वर्षीय बालक मूलशंकर शिवरात्रि की पहली सायं कथा सुनने के लिए गया। कथा में सुने विचारों से प्रभावित होकर मूल ने पूर्ण श्रद्धा, विश्वास से सारा दिन निराहार व्रत रखकर उसकी पूर्ति के लिए रात्रि का जागरण करते हुए देखा, कि भक्तों ने बड़ी श्रद्धा से जिस प्रसाद को शिवजी को समर्पित किया था, उसको चूहे खा रहे हैं। जबकि पण्डित जी ने कथा में बताया था, कि शिवजी बहुत अधिक शक्तिशाली हैं। उन्होंने अनेक राक्षसों को मारा है और कई दुर्गों को गिराया है। तब बालक मूल ने पिता जी को जगा कर बड़ी हैरानी से पूछा, कि ये महान शिव इन चूहों को प्रसाद खाने से रोकते क्यों नहीं? इस प्रकार के उभरे अनेक प्रश्न पूछे, पर पिता जी के उत्तरों से मूल के मन को सन्तोष न हुआ, हाँ, यह सुनकर कि यह सच्चा शिव नहीं है, मूल ने मन ही मन सच्चे शिव के दर्शन की प्रतिज्ञा की और पिता जी से अनुमति लेकर मूल मन्दिर से घर लौट आया। व्रतभंग और पूजा से विरक्ति के कारण पिता जी का रोष मूल के प्रति धीरे–धीरे जहाँ कुछ शान्त हुआ, वहाँ पूर्ववत मूल की पढ़ाई चलती रही।

मूलशंकर का जीवन जब मैदानी नदी की तरह चल रहा था, तो एक बार रात को पिता जी के साथ नाटक देखते हुए सूचना आई, कि मूल की बहन की हैजे से मौत हो गई है। मूल के जीवन में मौत की यह पहली घटना थी, अतः कुमार मूल को कुछ समझ में न आया। वह केवल परिवार की विह्वलता को देखता रह गया। कुछ वर्ष बाद जब मूल के प्रिय चाचा की मृत्यु हुई, तो मूल को पता चला, कि मृत्यु अपनों को छीनकर उनकी छत्रछाया से किस प्रकार वंचित कर देती है। मृत्यु से उभरी अनेक जिज्ञासाओं ने मूल की वैराग्य भावना को खूब बढ़ाया। अतः मृत्यु विजय का विचार उभरा।

इस प्रकार सच्चे शिवदर्शन की पहली गाँठ के साथ दूसरी गाँठ भी आकर जुड़ गई। इन गाँठों को खोलने की उधेड़बुन के दिनों में युवा मूल को जो भी विद्वान्, साधु, महात्मा मिला, मूल ने उसी के सामने अपनी जिज्ञासा रखी। सभी से एक–सा उत्तर मिला, कि यह सब योग से ही साधा जा सकता है और योग किसी गुरु से ही सीखा जा सकता है। इन्हीं दिनों मूल ने माता–पिता से विशेष अध्ययन के लिए काशी जाने की अनुमति माँगी, पर समीपवर्ती पाठशाला की ही स्वीकृति मिली। वहाँ पाठ्य–पुस्तकों को पढ़ते हुए समय–समय पर मूल ने अपनी विशेष जिज्ञासायें भी हल करनी चाहीं और योग सीखने की इच्छा प्रकट की, तो पढ़ाने वाले ने युवक मूल के पिता को ही तब सावधान कर दिया। अतः मूल को घर वापस बुलाकर उसके विवाह की तैयारियाँ शुरु कर दी गईं।

इस नए बन्धन को भाँप कर युवक मूल एक दिन सायंकाल योग सिखाने वाले गुरु की खोज में निकल पड़ा। इस खोज के लिए वह मूल पहले शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर लगातार चौदह वर्ष भटकता रहा। इसके लिए मैदानों, पहाड़ों, जंगलों, बर्फीली नदियों की खाक छानी। इन दिनों शास्त्र के नाम पर जिसने जो पढ़ाया, सो पढ़ा और योग के रूप में जिसने जो योग सिखाया–सो सीखा। अन्त में मथुरा जाकर ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी को गुरु रूप में स्वीकार किया। जिनसे लगभग तीन वर्ष विशेष रूप से अष्टाध्यायी और महाभाष्य का अध्ययन किया।

एक दिन दयानन्द अपने गुरु से विदा लेने के लिए पहुँचे, तो गुरुजी ने पूर्व प्रतिज्ञाओं को परोक्ष में कराकर जीवन का कांटा ही बदल दिया। गुरु आज्ञा के अनुरूप आर्षज्ञान का दीप जलाते हुए ऋषि दयानन्द सरस्वती एक नगर से दूसरे नगर पहुँचे। इस ज्ञान दीप को सदा प्रज्ज्वलित रखने के लिए महर्षि दयानन्द ने 1875 में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज ने अपने कर्त्तव्य को पहचाना, अपनाया और फिर महर्षि के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए शिवरात्रि को ऋषिबोधोत्सव का रूप दिया, क्योंकि इसी दिन मूल के मन में विचार क्रान्ति का बीज प्रथम अंकुरित हुआ था।

ऋषि जीवन की सारी कथा सामने आने पर एक प्रश्नमाला और भी उभरती है, कि ऋषि बोधोत्सव का अभिप्राय क्या है? क्या यह बोध गौतम बुद्ध के बोध की तरह वर्षों की तपस्या के पश्चात् परिस्थितियों के अनुभव से उभरा था? या अर्जुन ने योगेश्वर श्री कृष्ण से गीताज्ञान प्राप्त करने पर जैसे कहा था **'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा** (गी. 18, 73) क्या वैसी ही स्थिति यहाँ भी है? हाँ यह बात स्वीकार कर लेने पर पुनः जिज्ञासा उभरती है, कि वह ऋषि का बोध कौन–सा है? जिसका उत्सव, उल्लास, खुशी आर्यसमाज आयोजित कर रहा है? ऋषि का वह बोध मेरे–आपके पास अब भी है या वह ऋषि के साथ चला गया है? वह बोध अब भी है, तो हमारे अन्दर अन्य की अपेक्षा क्या कोई अनोखापन है? जैसे किसी वस्तु का प्राप्तकर्ता या प्रकाश वाला सन्तोष, विश्वास अनुभव करता है, क्या वैसी खुशी हमारे अन्दर इस समय है? या केवल दूसरों की तरह हम भी आज यहाँ घटना को याद करने या गाने के लिए ही आये हैं। हाँ, यदि ऋषिबोध में कोई खूबी है, तो उस पर एक नई प्रश्नपंक्ति यह उभरती है, कि आज की परिस्थितियों में उस बोध का क्या उपयोग है? अर्थात् आज के हमारे जीवन में यह बोध कहाँ, कितना सहायक है? हाँ यदि उस बोध ने केवल अपने समय पर कुछ अनोखापन दर्शाया था, तो फिर, वह ऋषि बोध जार्ज स्टीफैंसन, जेम्सवाट के

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

नमन तुम्हें अनिन्द्य, अमिट ज्योति टंकारा की

नमन तुम्हें अनिन्द्य, अमिट ज्योति टंकारा की।
गायें हम गुणगान, सदैव तुम्हारा ही।।
वेदोद्धारक पतितोद्धारक, ऋषिराज तुम्हें सौ–सौ वन्दन।
जग के प्रतिपालक, मातृमान का पाठ पढ़ाया अभिनन्दन।।
टंकारा की रज हुई धन्य, स्पर्श तुम्हारा पा करके।
आर्यावर्त्त आदर्श बना, सिद्धान्त वेदों का गा करके।।
गुंजन भ्रमरों ने किया, कोकिल का कूँ–कूँ स्वर गूँजा।
पी–पी कर पपीहा बोल उठा, ऋषि हुआ न कोई तुम सा दूजा।।
जब शिवरात्रि बनी बोधरात्रि, जग का तमस मिटाने को।
ऋषि जगाया जग तुमने, बिछुड़ों को गले लगाने को।।
वेदों का सत्यप्रकाश किया, पावन प्रभु ने दुनिया आगाज़।
फिर सत्यार्थ प्रकाश रचा तुमने, जागृत किया मानव समाज।।
आर्यों के मतभेद बदल, भारत जननी परतन्त्र हुई।
आक्रान्ताओं से पदाक्रान्त, अथक अश्रुपात करती जननी।।
सदियों बाद परम पिता ने सुनी करुण क्रन्दन उसकी।
मुखमंडल पर सूर्य प्रभात हुआ, माँ भारती की हंसी झलकी।।
टंकारा की पुण्यधरा ने, दयानन्द को जन्म दिया।
सौभाग्य देश का उदय हुआ, और भारतोद्यान सुरम्य हुआ।।
भारत का सौभाग्य रूप, वह दयानन्द बनकर आया।
आर्यावर्त्त, आर्य, आर्यत्व का, सौभाग्य साथ में था लाया।।
ऋषिवर की जय करने वाले, ऋषि की ही बातें भूल गए।
स्वार्थ और पद लिप्सा में, ऋषि उपदेशों से दूर हुए।।
जग तुम्हें निहार रहा प्रतिपल, ले जीवन की अगणित आशाएँ।
संगठन सूक्त को अपनाओ, और दूर करो सब विफलताएँ।।
ऋषि दयानन्द के सैनिक बनकर, देश में धर्म प्रकाश करो।
प्रथम आर्य बनो तुम खुद, फिर जग में वेद प्रकाश भरो।।
ऋषि जन्मस्थल टंकारा आकर, बोध पर्व को अपनाओ।
बैट्री चार्ज करो अपनी, परम लक्ष्य मुक्ति पाओ।।

हरि ओ३म् शास्त्री
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
से.–14 फरीदाबाद

महर्षि दयानन्द के प्रेरक व शिक्षाप्रद प्रसंग

● खुशहाल चन्द्र आर्य

वैसे तो महर्षि दयानन्द के जीवन में सैकड़ों प्रेरक व शिक्षाप्रद प्रसंग है, पर यहाँ पर कुछ प्रसंगों को ही प्रस्तुत करते हैं। वे इस भाँति है।

1. मैं ज्ञानी भी और अज्ञानी भीः– गुजरात में डॉ. विशनदास यद्यपि वेदान्ती थे। उन्होंने महर्षि जी से निवेदन किया कि लाहौर से निवृति पाकर गुजरात की जनता को भी उपकृत करने की कृपा करें। महर्षि जी पौष सुदी नवमी, संवत् 1934 को गुजरात पहुँच गये। एक दिन दमदमे में विश्राम किया। अगले दिन फतहनगर जाकर ठहर गये। प्रवचनों के पश्चात पादरी और मौलवी विभिन्न धार्मिक विषयों पर चर्चा करते और शंका का समाधान महर्षि जी करते। महर्षि जी तब तक समझाते जब तक जिज्ञासा शान्त न हो जाती। महर्षि जी अपने तर्कों और प्रमाणों से मिथ्यावादियों के मुँह बन्द कर देते। एक दिन कुछ लोगों ने परामर्श किया कि दयानन्द से कोई ऐसा प्रश्न पूछा जाये कि वे निरुत्तर हो जाएँ। उन्होंने निश्चय किया कि अगली सभा में महर्षि जी से पूछें कि आप ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं? यदि उन्होंने कहा हम तो ज्ञानी हैं, तो हम उनसे कहेंगे कि आप तो घमण्डी हैं। विद्वान कभी घमण्डी नहीं होते। यदि उन्होंने कहा कि अज्ञानी हैं तो हम झट कह देंगे कि फिर दूसरों को आप क्या शिक्षा देंगे? ऐसा प्रश्न सोचकर वे बहुत प्रसन्न हुए और महर्षि जी के पास पहुँच गये। उनके समीप बैठकर एक ने प्रश्न किया– "महर्षि जी आप ज्ञानी हैं या अज्ञानी?" "महर्षि जी न तुरन्त उत्तर दिया– **"मैं ज्ञानी भी हूँ और अज्ञानी भी।"** पण्डितों में से एक ने फिर प्रश्न किया– "दोनों कैसे हो सकते हैं आप?" महर्षि ने कहा "जिन विषयों को मैं जानता हूँ, उनमें ज्ञानी हूँ, जिन विषयों को मैं नहीं जानता उसमें मैं अज्ञानी हूँ।"

पण्डितों के पास और कोई प्रश्न नहीं था। वे चुपचाप उठकर चले गये। मार्ग में चर्चा कर रहे थे कि महर्षि जी को विद्वत्ता में परास्त करना सम्भव नहीं है।

2. महर्षि दयानन्द की दयाः– एक पाठशाला में पण्डित जी पढ़ाते थे। उन्होंने अपने छात्रों से कहा कि हम सभी कथा सुनने चलेंगे। तुम अपनी पुस्तकों के थैलों में ईंट–रोड़े और पत्थर भर कर वहाँ बैठना। जब मैं संकेत करूँ, उसी समय कथा करने वाले पण्डित के ऊपर ये कंकड़–पत्थर बरसा देना, फिर हम तुम्हें लड्डू देंगे। वह पण्डित उन बच्चों को लेकर महर्षि जी के सभा में पहुँच गया। साँझ होते ही उसने छात्रों को संकेत कर दिया–बच्चों ने महर्षि पर कंकड़–पत्थर फेंकने आरम्भ कर दिये। उनमें से कुछ बच्चों को पुलिस ने पकड़ कर महर्षि जी के सामने प्रस्तुत कर दिया। बच्चे डर रहे थे। महर्षि जी ने प्यार से पूछा कि तुम हमारे ऊपर पत्थर क्यों फेंक रहे थे? बच्चों ने पण्डित जी द्वारा कही गई सारी बातें महर्षि जी को बता दी। महर्षि जी ने तुरन्त लड्डू मँगवाए और बच्चों में बाँट दिया।

3. सत्य कहने में हमें कोई भय नहींः– महर्षि दयानन्द सरस्वती एक निर्भीक संन्यासी थे। अपनी बात को सरल सपाट शब्दों में कहने से वे कभी नहीं चूकते थे। सभी जानते थे कि महर्षि जी किसी भी मत की उन बातों का खण्डन करते हैं जो अतार्किक, अव्यवहारिक और वेद–विरुद्ध हों।

महर्षि जी की प्रवचन–सभा चल रही थी। उसी मार्ग से डिप्टी कलेक्टर अलीजान जा रहे थे। वे भी महर्षि जी के प्रचार कार्य से अनभिज्ञ नहीं थे। उन्होंने अपनी सवारी रोकी और महर्षि जी से बोले कि अपने व्याख्यानों में आप बहुत कठोरता से काम लेते हैं। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। महर्षि जी ने तपाक से उत्तर दिया कि हम असत्य कभी नहीं कहते। सत्य कहने में हमें कभी किसी से भय नहीं है।

4. अन्न दूषित नहीं होता:– महर्षि जी प्रचारार्थ फर्रूखाबाद (उ.प्र.) में पहुँचे। नगर के बाहर लाला जगन्नाथ के विश्रान्तघाट पर जाकर विराजे। नियमित रूप से नगरवासी उनके प्रवचन सुनने के लिए आने लगे। कुछ पण्डित लोग महर्षि जी से शास्त्रार्थ करने की चर्चा तो करते परन्तु उनके सम्मुख आने का साहस न जुटा पाते।

उस नगर में घर–गृहस्थी बसाकर रहने वाले कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्हें साधु कहकर पुकारा जाता था, परन्तु उनके हाथ का बना भोजन ब्राह्मण नहीं करते थे। एक दिन एक श्रद्धालु साधु परिवार का सदस्य अपने घर कढ़ी भात बनवाकर महर्षि जी की सेवा में उपस्थित हुआ और भोजन लेने की प्रार्थना की। भोजन का समय था। महर्षि जी ने प्रेम–पूर्वक शान्त भाव से भोजन किया। इस बात की जानकारी जब वहाँ के ब्राह्मणों को हुई तो उन्होंने भारी विरोध किया। वे महर्षि जी के समीप जाकर बोले कि हम लोग भी इन साधुओं द्वारा बनाया भोजन नहीं करते हैं। उनके हाथ का बना भोजन करके आदमी पतित हो जाता है। ऐसा करना आपके लिए उचित नहीं था।

महर्षि जी उनकी बातें सुनकर हँसते हुए बोले कि किसी के हाथ से बना अन्न दूषित नहीं होता। अन्न दूषित तब होता है जब वह अनुचित साधनों से प्राप्त किया जाये या उसमें किसी अखाद्य वस्तु का मिश्रण कर दिया जाये। इन लोगों का अन्न परिश्रम से कमाया हुआ अन्न है, इसलिए इसके ग्रहण करने में कोई दोष नहीं है। ऐसे पवित्र अन्न को ग्रहण करने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

5. सत्य का प्रकाश करना मेरा धर्म हैः– भादो द्वादशी संवत् 1936 को महर्षि जी बरेली (उ.प्र.) पहुँचकर लाला लक्ष्मीनारायण की कोठी में ठहर गये। उनके प्रवचनों में सामान्य जनों के अतिरिक्त उच्च सरकारी अधिकारी भी भाग लेते थे। एक दिन प्रवचन में महर्षि जी ने ईसाई धर्म के सम्बन्ध में कहा कि ये लोग कुमारी से पुत्र होना बताते हैं और उसके लिए परमात्मा को दोषी ठहराते हैं।

इससे सभा में उपस्थित कमिश्नर साहब क्रोधित हो गए और लक्ष्मीनारायण को बुलाकर कहा कि अपने पण्डित को समझाइए। वे अपने व्याख्यानों में कठोरता न बरतें। हम लोग तो शिक्षित हैं। हिन्दू और मुसलमान भड़क गए तो स्वामी जी को भारी पड़ जायेगा।

लक्ष्मीनारायण जी ने साहस करके यह सूचना महर्षि जी को दी। अगले दिन स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में स्पष्ट किया कि कुछ सज्जन मुझे कहते हैं कि सत्य न कहें। ऐसा करने से कलेक्टर, कमिश्नर साहब रुष्ट हो जायेंगे। महर्षि जी ने गरजते हुए कहा कि चक्रवर्ती राजा भी चाहे कुपित क्यों न हो जाए, परन्तु दयानन्द सत्य का प्रकाश करने से नहीं रुक सकता। उन्होंने आगे कहा कि दयानन्द के शरीर को नष्ट किया जा सकता है, परन्तु दयानन्द की आत्मा को छिन्न–भिन्न करना किसी के वश की बात नहीं है। अपने शरीर की रक्षार्थ दयानन्द सत्य के रास्ते से नहीं हट सकता।

6. तोप का भय दिखाने पर भी वेद ही श्रुतियाँ की निकलेंगीः– मेरठ में महर्षि जी ने सहारनपुर के रास्ते देहरादून के लिए प्रस्थान किया। वे सहानपुर स्टेशन पर कुछ समय रुके और अपने भक्तों से संक्षिप्त वार्तालाप किया। उस समय उनके एक भक्त लाला भोलानाथ वैश्य ने चिन्तित होकर कहा कि महाराज, जैनी आपको गिरफ्तार कराकर कारावास में डलवाना चाहते हैं। उन्होंने इस आशय का विज्ञापन छपवा दिया है। इस पर महर्षि जी मुस्कुराये और बोले, "भोलानाथ जी, मुझे कोई तोप के मुख पर बाँधकर भी पूछे कि सत्य क्या है? तब भी दयानन्द के मुख से वेद की श्रुतियाँ ही निकलेंगी।

180, दो तल्ला
महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता

☞ पृष्ठ 06 का शेष

ऋषि बोधोत्सव

इंजन की तरह, केवल पुरातत्त्व की वस्तु ही होगा और तब वह ऋषिबोध स्मरणीय, अभिनन्दनीय तो कहा जा सकता है, अनुकरणीय नहीं?

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द के बोध को यदि सूर्य आदिवत् सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वजनिक मानता है, तब तो खुले दिल से यह कहा जा सकता है –

'जिसका दिल चाहे–वह आजमाए'

हाँ, यहाँ कुछ यह भी पूछ सकते हैं, कि ऋषि दयानन्द ने क्या कोई अपूर्व देन दी है, जिसको इतना महत्त्व दिया जा रहा है। जबकि हम देखते है, कि महर्षि और आर्यसमाज दूसरों की तरह ही वेद, उपनिषद, स्मृति, रामायण, महाभारत तथा ईश्वर, यज्ञ, भक्ति की ही बात करते हैं। ऐसी स्पष्ट स्थिति होने पर यह बताना और भी आवश्यक हो जाता है, कि सारे भारतीय साहित्य धर्म के परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द का अपना योगदान क्या है? आइए! पूर्व उभारे गए प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए पहले अन्तिम बात से ही चर्चा आरम्भ करते हैं।

निःसन्देह महर्षि स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट घोषणा की है, कि "जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको कि मैं भी मानता हूँ, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूँ। मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना व मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है, उसको मानना–मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है।"

स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश पृ. 582

"(पूर्वपक्ष) तुम्हारा क्या मत है? (उत्तरपक्ष) वेद अर्थात् जो–जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस–उस का हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं। जिस लिए वेद हमें मान्य है, इसलिए हमारा मत वेद है।"

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

हमने ऋषि दयानन्द के उपकारों को न तो जाना है और न उनसे उऋण होने का प्रयत्न किया है

● मनमोहन कुमार आर्य

महाभारत युद्ध के बाद देश का सर्वविध पतन व पराभव हुआ। इसका मूल कारण अविद्या था। महाभारत के बाद हमारे देश के पण्डित, ज्ञानी व ब्राह्मण वर्ग ने वेद और विद्या के ग्रन्थों का अध्ययन–अध्यापन प्रायः छोड़ दिया था जिस कारण से देश के सभी लोग अविद्यायुक्त होकर असंगठित हो गये और ईश्वर उपासना एवं सत्कर्मों को भूल कर मिथ्या पूजा व अवैदिक कर्मों को करके दुःख व पतन को प्राप्त हुए। यह स्थिति न्यूनाधिक 5 हजार वर्षों तक जारी रही। इसके बाद ईश्वर की महती कृपा तथा आर्यों व हिन्दुओं के सौभाग्य से ऋषि दयानन्द सरस्वती (1825–1883) का आविर्भाव हुआ। उन्हें बाल्यकाल में ही अवैदिक जड़ पूजा के विरुद्ध ईश्वर के द्वारा अन्तः प्रेरणा प्राप्त हुई और घर में उनकी छोटी बहिन और चाचा की मृत्यु की घटनाओं ने उन्हें विरक्त बना दिया। इसके कुछ वर्षों बाद वह सत्य ज्ञान वा विद्या की खोज में निकल पड़े और देश के अनेक भागों में जाकर धार्मिक व सामाजिक विद्वानों की संगति कर उनके उपदेश व ग्रन्थों के अध्ययन से विद्या प्राप्त करते रहे। उन्होंने योग्य–योग–गुरुओं से योगाभ्यास भी सीखा और ईश्वर साक्षात्कार की सिद्धि को प्राप्त हुए। इस पर भी उनकी विद्या प्राप्ति की भूख शान्त नहीं हुई। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से वह सन् 1860 में उनके शिष्य प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से विद्या प्राप्ति हेतु मथुरा पहुँचे और लगभग 3 वर्ष उनके सान्निध्य में रहे। उनसे उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेद के वैदिक व्याकरण अष्टाध्यायी–महाभाष्य पद्धति सहित अनेक शास्त्रीय ग्रन्थों को पढ़ा व उन पर उनका दृष्टिकोण जाना। विद्या पूरी होने पर गुरु की प्रेरणा से उन्होंने देश व संसार से अविद्या को दूर करने का व्रत लिया और वेद प्रचार के कार्य में संलग्न हो गये। सन् 1863 से जीवन के बलिदान दिवस 30–10–1883 तक उन्होंने अज्ञान व अविद्या को नष्ट कर विद्या के मूल स्रोत ईश्वरीय ज्ञान वेद के प्रचार व प्रसार का प्रशंसनीय कार्य किया। सत्य की रक्षार्थ उन्हें अविद्यायुक्त साम्प्रदायिक, अवैदिक, साम्प्रदायिक ग्रन्थों सहित अज्ञान, अन्धविश्वासों तथा मिथ्याचारों से युक्त मान्यताओं व परम्पराओं का खण्डन व समीक्षा आदि भी करनी पड़ी। सभी अविद्यायुक्त मत–मतान्तरों के लोग व अंग्रेजी सरकार उनके देश व समाज हित के कार्यों से अप्रसन्न होकर ऋषि के विरोधी हो गये जो अक्टूबर, 1883 में उनका धर्म व ईश्वरीय ज्ञान वेदों के सत्य स्वरूप का प्रचार करने के लिये बलिदान का कारण बना।

ऋषि ने मनुष्य जाति मुख्यतः आर्य–हिन्दुओं पर जो उपकार किये हैं, उन पर विचार करते हैं तो उनका प्रमुख उपकार वेदों का उद्धार करना प्रतीत होता है। **वेदों के उद्धार से तात्पर्य यह है कि उनके समय में वेद वा वेद–संहितायें और उनके सत्यार्थ किसी को सुलभ नहीं थे। ऋषि दयानन्द ने अज्ञात स्रोतों से वेद संहिताओं को प्राप्त किया और अपने विपुल वेद–वैदुष्य से वेदों के व्यवहारिक सत्य अर्थ कर मनुष्य जाति को प्रदान किये।** ऋषि ने वेदों का जो भाष्य किया है वह ऋग्वेद के सातवें मण्डल के इकसठवें सूक्त के दूसरे मन्त्र तक तथा सम्पूर्ण यजुर्वेद का है। इस वेदभाष्य में उन्होंने सभी मन्त्रों को प्रस्तुत कर उनका पदच्छेद कर अन्वय सहित प्रत्येक पद का संस्कृत व हिन्दी में पदार्थ एवं भावार्थ दिया है। ऋषि का किया हुआ वेदभाष्य **'न भूतो न भविष्यति'** की उपमा के समान अद्वितीय है। ऋषि दयानन्द जैसी योग्यता का व्यक्ति महाभारत युद्ध के बाद देश–देशान्तर में कहीं उत्पन्न नहीं हुआ। इस बात का ज्ञान व समझ उन्हीं व्यक्तियों को ही हो सकती है जो मत–मतान्तरों की पक्षपातयुक्त दृष्टि से सर्वथा मुक्त व निष्पक्ष हैं, स्वस्थ बुद्धि वाले हैं और ऋषि दयानन्द के सम्पूर्ण साहित्य का एक सत्यान्वेषी के रूप में अध्ययन करते व कर चुके हैं। इस वेदभाष्य के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द ने चारों वेदों की भूमिका भी लिखी है जिसे उन्होंने **''ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका''** नाम दिया है। यह ग्रन्थ भी सम्पूर्ण वैदिक साहित्य का अपूर्व एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस भूमिका ग्रन्थ से ही सम्पूर्ण वेदों का सत्यस्वरूप, वेद विषयक अधिकांश विषयों की जानकारी व ऋषि दयानन्द की वेदार्थ प्रक्रिया आदि का ज्ञान होता है। हम समझते हैं कि यदि कोई मनुष्य केवल अक्षराभ्यास कर ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि कुछ ग्रन्थों को ही पढ़ व समझ ले तो उसका जीवन अन्य मत–मतान्तरों के अनुयायियों व आचार्यों की तुलना में कहीं अधिक योग्य होने सहित कल्याण को प्राप्त होता है।

ऋषि दयानन्द का एक महत्त्वपूर्ण कार्य अविद्या का नाश करने के लिये वेदों का उद्धार व उनका भाष्य करने सहित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा संस्कार विधि आदि ग्रन्थों का लेखन व प्रकाशन है। असत्य, अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, मिथ्या–परम्पराओं का युक्ति व तर्क पूर्वक खण्डन व वैदिक मान्यताओं का मण्डन करना भी उनकी विशेषता है। सत्य मान्यताओं का मण्डन व असत्य तथा अन्धविश्वास पर आधारित मान्यताओं का खण्डन मनुष्य जाति की उन्नति के लिये अत्यावश्यक है। हम जब भी किसी विषय या वस्तु का अध्ययन करते हैं तो हम उसके सभी पक्षों पर विचार करते हैं। उससे ही हमें सत्य व असत्य का बोध होता है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में इसी समीक्षात्मक व खण्डनात्मक शैली का प्रयोग कर अनेक धार्मिक एवं सामाजिक विषयों के सत्य व असत्य पक्ष को सामने रखकर उनका यथार्थ खण्डन–मण्डन किया है जिससे पाठकों का भ्रम व सभी शंकायें दूर हो जाती है। इसी आधार पर उन्होंने नाना प्रकार की जड़ मूर्तियो की पूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, बाल विवाह, सामाजिक असमानता, जन्मना जातिवाद, भूतप्रेत विषयक भ्रान्तियों आदि का खण्डन भी किया है। ऋषि दयानन्द ईश्वर, जीव तथा प्रकृति को अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अविनाशी व अमर बताते हैं। वह जीवात्माओं की संख्या को अनन्त तथा परमात्मा को केवल एक बताते हैं। इस जगत का उपादान कारण वह दर्शन की मान्यताओं के अनुसार त्रिगुणात्मक प्रकृति को स्वीकार करते हैं जिसका निमित्त कारण ईश्वर है। जीवात्मा ही वह चेतन सत्ता है जिसको पूर्वजन्मों के अवशिष्ट अभुक्त कर्मों का सुख व दुःख रूपी भोग कराने के लिये परमात्मा ने इस सम्पूर्ण सृष्टि को बनाया है। **ऋषि दयानन्द के अनुसार परमात्मा इस सृष्टि का उत्पत्तिकर्त्ता, पालनकर्ता तथा प्रलयकर्ता है। वह अनादि काल से अनन्त बार सृष्टि बना चुका है और भविष्य में अनन्त काल तक सृष्टि की उत्पत्ति, रक्षण और प्रलय करता रहेगा। अविद्या दूर करने तथा सत्य व असत्य मान्यताओं से परिचित कराने के कारण भी सारी मनुष्य जाति ऋषि दयानन्द की ऋणी है।**

ऋषि दयानन्द की एक देन यह भी है कि उन्होंने हमें महाभारतकाल व उससे पूर्व के अपने प्राचीन गौरव से भी परिचित कराया है। उनके अनुसार वैदिक काल का भारत अत्यन्त समुन्नत था। प्राचीन काल में हमारे देश में वायुयान, जलयान तथा भूमि पर तेज गति से चलने वाले रथ भी होते थे। हमारी सेनायें अनेक प्रकार के अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित होती थीं और युद्धों में विजय प्राप्त करती थी। वैशेषिक दर्शन हमें प्रकृति व पदार्थ विज्ञान के अनेक सत्य सिद्धान्तों का परिचय कराता है। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल में प्राचीन इतिहास विषय पर देश के अनेक भागों में अनेक व्याख्यान दिये। पूना में सन् 1875 में दिये गये उनके 15 व्याख्यानों को एक आशुलिपिक ने नोट किया था जिसके मराठी भाषा में संस्करण प्रकाशित हुए। इसका हिन्दी अनुवाद भी वर्तमान में सुलभ हैं। **इन 15 व्याख्यानों में से 6 व्याख्यान भारत के प्राचीन गौरवपूर्ण इतिहास पर हैं जिसमें अनेक लुप्त तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है जिनसे लोग पहली बार परिचित होते हैं।** यह भी बता दें कि ऋषि दयानन्द के अनेक शिष्यों यथा पं. भगवद्दत्त जी, रिसर्च–स्कालर तथा आचार्य रामदेव आदि ने भी प्राचीन इतिहास पर अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। बाल्मीक रामायण तथा महाभारत ग्रन्थ तो इतिहास के ग्रन्थ हैं ही जिसमें प्राचीन भारत का इतिहास सुरक्षित है।

ऋषि दयानन्द ने अनेक क्षेत्रों में अनेक कार्य किए जिसके लिये देश उनका ऋणी है। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज को दस स्वर्णिम नियम भी दिये हैं। यह सभी नियम सर्वोत्तम नियम हैं। इन नियमों से ईश्वर के सत्य स्वरुप का बोध होने सहित वेदों की महत्ता तथा मनुष्य जीवन की उन्नति के प्रमुख आधार सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने की प्रेरणा भी है। सभी नियम अपूर्व होने सहित सभी संस्थाओं से सर्वोत्तम भी हैं। ऋषि दयानन्द ने अविद्या व अज्ञान का नाश कर विद्या व ज्ञान की वृद्धि करने की प्रेरणा व आज्ञा दी है। यही सब प्रकार की उन्नतियों की उन्नति है। इसी से प्रेरणा लेकर ऋषि दयानन्द के अनुयायियों ने उनके विचारों व मान्यताओं के अनुरूप वैदिक गुरुकुल एवं दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल व कॉलेज स्थापित किये जो आज भी देश को अपने प्राचीन गौरव से परिचित कराने के साथ शिक्षा की अर्वाचीन आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे हैं। **इसके साथ ही आर्यसमाज के गुरुकुल वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में भी महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। आर्यसमाज ने ही सन् 1883–1884 में देश को राजनैतिक**

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

☞ पृष्ठ 05 का शेष

प्रभु दर्शन

थे। यह ब्रह्मज्ञाता आत्मदर्शी राजा अश्वपति घोषणा करता है–

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नाऽनाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।। छा.उ. 5.11.5

"मेरे देश में कोई चोर नहीं, कोई कंजूस नहीं, शराब पीनेवाला नहीं, अग्न्याध्यान (प्रतिदिन हवन–यज्ञ के लिए अग्नि की स्थापना से शून्य कोई नहीं, विद्या से हीन नहीं, व्यभिचारी नहीं, व्यभिचारिणी स्त्री कहाँ?"

उद्देश्य हमारा भी यही है कि हमारे देश में ऐसी ही व्यवस्था स्थापित हो जाए कि न कोई चोर हो, न कंजूस, कोई शराब पीनेवाला न हो, न व्यभिचारी। परन्तु हम वे साधन अपनाने से कतराते हैं, जिनके द्वारा भगवान् राम और राजा अश्वपति ने धरती पर स्वर्ग बना दिया था। यह व्यवस्था आत्मदर्शी और योगाभ्यासी शासकों के शासन में ही हो सकती है। यह एक अनुभूत प्रयोग है। इस नुस्खे का हमारे पूर्वजों ने केवल आविष्कार ही नहीं किया, अपितु समाज की प्रयोगशाला में इसका सफल प्रयोग भी किया। तब क्या अब भी यह आवश्यक नहीं कि इधर–उधर भटकने में बजाय सिद्धि और सफलता के इसी निश्चित मार्ग को अपनाया जाये?

यह अनुभुत प्रयोग केवल शासकों के लिए ही नहीं हैं, प्रत्येक व्यक्ति के लिए हैं। आप कोई भी काम करते हों–व्यापारी हों, या ठेकेदार, मिल–मालिक हों या वकील, जमींदार हों या किसान, सेना में हो या सिविल विभाग में, धनी हों या निर्धन, कुछ भी हों, कहीं भी हों, किसी अवस्था में हों–बालक, युवक, वृद्ध, सभी स्त्री–पुरुषों के लिए मनोरथ प्राप्ति का यही एक मार्ग है। जीवन–संग्राम में इससे बेहतर ओर कोई अस्त्र नहीं है। आत्मदर्शी की विजय क्षणिक नहीं होती, वह स्थायी और सच्ची होती है।

आज से ग्यारह वर्ष पहले मैंने "प्रभुभक्ति" के मार्ग की ओर संकेत किया था। आज उसी क्रम की दूसरी कड़ी "प्रभु–दर्शन" कर भेट रहा हूं। यह पुस्तक लिखने का उद्देश्य केवल केवल यही है कि संसार और समाज का ध्यान उस तत्त्व की ओर आकर्षित किया जा सके, जिसमें सफलता और शान्ति का रहस्य निहित है। मेरी निश्चित धारणा है कि यह लोक–परलोक दोनों को सुधारने वाला है। सारे कष्ट–क्लेशों को काटकर सुख और समृद्धि को देने वाला है। संसार नास्तिकता के गहरे गड्ढे की ओर अग्रसर हो रहा है। इससे बचने का एक ही मार्ग है कि हाथ में आत्म–दर्शन और प्रभु दर्शन की प्रकाश–ज्योति थाम ली जाये। ऋग्वेद में कहा है–

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्।। ऋ. 1.22.20।।

"उस व्यापक परमेश्वर के श्रेष्ठ रूप के ज्ञानी पुरूष सदैव देखते हैं, जैसे द्युलोक में व्याप्त सूर्य को देखते हैं।"

यदि कुछ व्यक्ति भी इस प्रकाश को ग्रहण कर सके तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूंगा।

अन्त में मैं प्रभु और गुरुचरणों में प्रणाम करता हूँ, जिनकी कृपा और सहायता से यह ग्रन्थ सम्पन्न हुआ है।

योग निकेतन, गंगोत्तरी
भाद्रपद कृष्ण–जन्माष्टमी 2007, वि.स.

☞ पृष्ठ 07 का शेष

ऋषि बोधोत्सव

सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–3, पृष्ठ 67

ऐसी स्थिति में जब हम महर्षि के योगदान की बात करते हैं, तो तुलनात्मक विवेचन से यह बात सामने आती है, कि महर्षि का अपूर्व योगदान यही है, कि महर्षि ने वेद की मान्यताओं को एक सुसंगत रूप दिया और यही महर्षि का तत्त्वबोध है। जिसका आर्य समाज अनुयायी बनकर उल्लासपूर्वक ऋषिबोधोत्सव आयोजित करता है। यह तत्त्वबोध जहाँ शास्त्रों के प्रमाणों से परिपुष्ट है, वहाँ उसमें तर्क का संगतिकरण ही महर्षि दयानन्द के तत्त्वबोध का सुसंगतपन है। जैसे कि–

सुसंगतपन

1. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज एक दौड़ सी लगी हुई है। हर एक सफल होने के लिए जल्दी से जल्दी सबसे पहले मंजिल पर पहुँचना चाहता है। लक्ष्य को साधने और सफलता, प्रगति के लिए जहाँ रास्ता स्पष्ट, सुनिश्चित होना चाहिए, वहाँ यदि मार्ग सरल, सीधा हो, तो सफलता प्रगति सरलता से मिल जाती है, क्योंकि प्रगति में गति शब्द जुड़ा हुआ है। अच्छी गति के लिए रास्ते का सरल, स्पष्ट, सक्षम, सुरक्षित होना बहुत जरूरी है। अधिकतर दो तरह के ही रास्ते हैं, जिनको संगत और असंगत के नाम से स्मरण किया जा सकता है। जैसे कि पुराने और नए नगरों की गलियों, सड़कों की स्थिति है। परिवहन के पथों की तरह जीवन के भी सुसंगत और असंगत रूप में दो प्रकार के पथ प्राप्त होते हैं।

2. महर्षि दयानन्द के तत्त्वबोध की दूसरी खूबी यह भी है, कि यह प्रकाश की तरह स्पष्ट, सुनिश्चित और सन्देह–भ्रम–भय रहित है। जैसे कि प्रकाश में वस्तु और स्थल के स्पष्ट होने से कार्य करना सरल होता है और अन्धकार में कार्य करना जहाँ कठिन, वहाँ ठोकर, भय, भ्रम, संशय बना रहता है। इसी दृष्टि से ही अन्याय, अत्याचार के लिए अन्धेर शब्द का प्रयोग होता है। प्रकाश के समान ही महर्षि का तत्त्वबोध जीवन के हर व्यवहार का एक स्पष्ट, सुनिशिचित, भ्रम–भय–संशय रहित रूप दर्शाता है। तब उसको अपनाने से कार्य की सिद्धि सरल हो जाती है। इसके साथ सिद्धि न होने पर होने वाली असफलता, ठोकर और धोखे का डर भी नहीं होता है।

उदाहरण

ऋषि बोध कितना सुसंगत और प्रकाश सदृश है, इसकी पहचान के लिए पहला स्पष्ट सा नमूना है–विवाह विषयक ऋषि दयानन्द का वर्णन। इसके सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में महर्षि ने विस्तारपूर्वक विवेचन किया है। इसके लिए जहाँ वेदादि शास्त्रों के प्रमाण दिए हैं, वहाँ युक्ति एवं तर्क से भी विचार किया है। उदाहरण के लिए यह एक ही उद्धरण आयु की दृष्टि से पर्याप्त होगा।

आठ, नौ और दशवें वर्ष पर्यन्त विवाह करना निष्फल है, क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् **चौबीसवें पर्यन्त विवाह करने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होती है।**

182 शालीमार नगर
होशियारपुर, पंजबा

☞ पृष्ठ 08 का शेष

हमने ऋषि दयानन्द के ...

स्वतन्त्रता का महत्त्व बताया और स्वराज्य की वकालत की थी। उन्होंने स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरि उत्तम और विदेशी राज्य को कितना भी अच्छा क्यों न हो, उसे पूर्ण सुखदायक स्वीकार नहीं किया। ऋषि दयानन्द की इस विषयक पंक्तियां ही स्वराज्य आन्दोलन का आधार बनी और इन्हीं से प्रेरित होकर क्रान्तिकारियों और नरम पंथियों ने देश की आजादी के लिये आन्दोलन किये।

ऋषि दयानन्द के अनुयायियों ने उनसे प्रेरणा लेकर समाज से जन्मना जातिवाद, सभी प्रकार के भेदभाव व छुआछूत को भी दूर करने का आन्दोलन किया जिसके अच्छे परिणाम सामने आये। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज सभी प्रकार के बौद्धिक एवं शारीरिक श्रम का सम्मान करते हैं और किसी भी व्यक्ति को अछूत स्वीकार नहीं करते और न ही किसी प्रकार का भेदभाव ही करते हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने समय में पौराणिकों द्वारा विरोध करने पर भी एक जन्मना दलित बन्धु नाई के घर की सूखी रोटी खाना स्वीकार किया था और दूसरे द्विज व्यक्तियों द्वारा उसके बाद लाया स्वादिष्ट भोजन अस्वीकार कर दिया था। बाल विवाह को समाप्त करने तथा कम आयु की विधवाओं के पुनर्विवाह का भी आर्यसमाज ने विशेष परिस्थितियों में समर्थन किया है। आर्यसमाज के अनुयायियों व नेताओं ने ही अन्तर्जातीय विवाहों को प्रचलित किया है। **ऋषि दयानन्द ने ही नारी जाति को पुरुषों से अधिक सम्मान की वकालत की और इसके शास्त्रीय एवं ऐतिहासिक उदाहरण व शास्त्रीय प्रमाण प्रस्तुत किये थे। ऋषि दयानन्द का उपदेश था कि माता, पिता और आचार्य को धार्मिक एवं विद्वान तथा सुचरितों से युक्त होना चाहिये। इसी से श्रेष्ठ सन्तान तथा श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण होता है। आर्यसमाज ने शिक्षा जगत में एक अनोखी क्रान्ति की। दलित परिवारों की सन्तानें गुरुकुलों में पढ़कर वेदों की विद्वान बनीं और उन्होंने वेदार्थ के प्रचार में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।** आर्यसमाज में एक ऐसे दलित संन्यासी भी हुए हैं जिन्होंने आर्यसमाजों की स्थापनायें की और दलितों को प्रोत्साहित कर व धन आदि से उनकी सहायता कर उनको योग्य विद्वान व प्रतिष्ठित व्यक्ति बनाया। ऋषि दयानन्द की सबसे बड़ी देन यह भी है कि उन्होंने वेदों का महत्त्व बता कर और वेद प्रचार कर विधर्मियों द्वारा किये जाने वाले छल, बल व प्रलोभन पर आधारित धर्मान्तरण पर रोक लगाई थी। यदि वह न आते तो हम अपनी दुर्दशा की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। हम ऋषि दयानन्द के उपकारों के लिये उनको सादर नमन करते हैं।

हमने ऋषि दयानन्द के कुछ उपकारों की संक्षिप्त चर्चा की है। ऋषि दयानन्द के देश, संसार व मानव जाति पर अगणित उपकार हैं। हमें उनके उपकारों के अनुरूप कार्य करके उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करना चाहिये। तभी हम कृतघ्नता से बच सकते हैं। ओ३म् शम्।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन: 9412985121

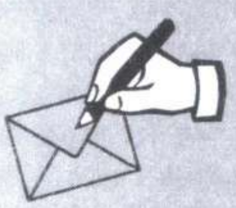

पत्र/कविता

शिवरात्रि पर विशेष

शिवरात्रि ने कर दिया कमाल

शिवरात्रि के पर्व ने क्या कर दिया कमाल।
आसान सरल कर दिए उलझन भरे सवाल।।
सत्य ज्ञान के उजाले ने बदली समय की चाल।
आडम्बरों का ढ़ोंग दिलों से दिया निकाल।।
चूहे की घटना देखकर शंका मचल गई।
निर्मल सच्चाई बोध के सांचे में ढल गई।।
जीवन की साख होश में आई संभल गई।
छोटी सी मूलशंकर की दुनिया बदल गई।।
अन्तःकरण में सोच कुछ ऐसी उतर गई।
संकल्प जागे दूर तक गहरी नज़र गई।।
किरणें बखेरती गई दृष्टि जिधर गई।
झोली प्रभु की भक्ति के हीरों से भर गई।।
फिर सच्चे शिव की खोज में जीवन खपा दिया।
मन में जो ठान ली उसे करके दिखा दिया।।
जीवन को तप की भठ्ठी में कुन्दन बना दिया।
वैदिक विचार शक्ति का डंका बजा दिया।।
निष्ठा को दयानन्द ने मन में बसा लिया।
मथुरा में विरजानन्द से सत्यज्ञान पा लिया।।
आज्ञा गुरु की मानकर मस्तिक झुका लिया।
संसार के उद्धार का बीड़ा उठा लिया।।
जीवन ऋषि का ऐसा था जैसे खुली किताब।
थी क्या मजाल देता कोई तर्क का जवाब।।
ऐसा लगाया वेद के सत्यज्ञान का हिसाब।
होने न दिया आर्य इतिहास को खराब।।
जाग्रत किया संसार को वेदों के ज्ञान से।
मन्दिर सजाये ओ३म् के भगवे निशान से।।
फिर गूंज उठा वातावरण निष्ठा की तान से।
जीना सिखाया आर्य जाति को शान से।।

वेदप्रकाश शर्मा
अंकुर–बी, हालर,
वलसाड–396001 गुजरात

नागरिकता संशोधन विधेयक एक प्रतिक्रिया

इस विधेयक का हिन्दी में नाम है–नागरिकता संशोधन विधेयक 2019, अंग्रेज़ी में नाम है–सिटीज़न्स अमेन्ड्मेट एक्ट 2019 (सी.ए.ए.)। इसके पक्ष में अनुकूल वातावरण नहीं बनाया गया जिसके फलस्वरूप देश भर में प्रदर्शन और हिंसा हुई।

इसमें व्यवस्था की गई है कि 5 वर्ष तक जो हिन्दू–सिख, जैन–ईसाई देश में वीसां पर रह रहे है, उन्हें देश की नागरिकता दे दी जाए। पहले यह अवधि 11 वर्ष की थी। पिछले विधेयक में और इसमें भी व्यवस्था रखी गई है कि अपवाद स्वरूप मुस्लिम पाकिस्तानियों को भी मान्यता। नागरिकता दे दी जाए। हम उसका विरोध करते हैं।

पाकिस्तान शत्रु देश है और आंतकवादी देश है अतः उसके मुस्लिम नागरिक को नागरिकता देने का यह प्रावधान समाप्त किया जाए।

पिछले विधेयक के अनुसार, सैकड़ों/हज़ारों मुस्लिम पाकिस्तानियों को नागरिकता दी गई है। यह गलत है।

अब भी वीसा पर आए हुए हज़ारों मुस्लिम पाकिस्तानी, भारत की नागरिकता मांग रहे हैं। इन्हें तुरन्त पाकिस्तान लौटाया जाए।

स्वार्थी विपक्ष चाहता है कि बांग्लादेशी घुसपैठियों को भी नागरिकता दे दी जाए जो नहीं दी जानी चाहिए।

फिर भारतीय नागरिकता रजिस्टर क्यों बनाया जाए?

आई.डी. गुलाटी
18/186, टीचर्स कॉलोनी
बुलन्दशहर

****

अच्छे संस्कार कैसे देंगे

संस्कार हमें अपने ही घर से मिलते हैं, जिससे हमारा जीवन सफल बन जाता है। लेकिन आजकल तो माता–पिता के पास अपने बच्चों से बात करने तक का समय नहीं है। फिर वह अपने बच्चों को अच्छे संस्कार कैसे देंगे? हमें तो अपने बच्चों का जीवन उज्ज्वल बनाना है। हमें थोड़ा समय तो अपने बच्चों को देना ही होगा, जिससे आगे चलकर हमारे बच्चे अपने देश का नाम ऊँचा कर दिखायें।

हमारे पास हमारे बच्चे ही हमारी धरोहर हैं। बेटा हो या बेटी, हमें बच्चों में भेदभाव नहीं करना चाहिए। हमें थोड़ा समय निकालकर अपने बच्चों को महापुरुषों की गाथा सुनानी चाहिए। हमारे बच्चे देश का गौरव हैं। आज हमें युवा पीढ़ी की बहुत ज़रूरत है। आप ये मत सोचो कि बेटा ही वंश चलायेगा। इसलिए बेटे को ही शिक्षा दिलानी है। नहीं ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। आजकल तो बेटियाँ हर काम कर रही हैं। क्या कोई काम ऐसा है जो हमारी बेटियाँ नहीं कर रहीं? बेटियाँ तो माता–पिता की शान होती हैं, अभिमान होती हैं।

हम अपनी बेटी से तो पूछते हैं कि इतनी देर कहां लगी, कभी अपने बेटों से भी पूछा है कि इतनी देर कहाँ लगी? यदि हम बेटों पर भी अंकुश लगायेंगे तो हमारा देश सुधर जायेगा। जगह–जगह छेड़–छाड़, बलात्कार आदि की घटनायें रोज ही सुनने को मिलती हैं। क्या हमारी बेटियाँ आज के युग में भी सुरक्षित नहीं हैं। यदि हम बेटों को भी अच्छी शिक्षा देंगे तो हमारे देश में छेड़–छाड़ बहुत कम हो जायेगी।

हमें दिल से सोचना होगा व अपने बच्चों को नया जीवन देना होगा। मेहनत व लग्न से अपने परिवार को सजाना है। बड़ों को मान–सम्मान, अतिथि सत्कार करना, ये सब हमें अपने बच्चों को शुरू से ही सिखाने चाहिए। हमें थोड़ा समय ज़रूर अपने बच्चों को देना ही होगा। बस यही असली संस्कार है। हमें आज युवा बच्चों को सही रास्ते पर लाना है। बच्चे ही हमारे देश की शान हैं।

श्रीमती गीता बंसल
आवास विकास कालोनी–1,
जिला बुलन्दशहर

****

खट्टी डकारें ..... संतरा खाएं

अम्ल–पित्त को बोलचाल की भाषा में मुँह में खट्टा पानी आना या तेजाब बनना आदि नामों से पुकारा जाता है। अम्ल–पित्त और अजीर्ण यानी बदहजमी एक–दूसरे से मिलते जुलते हैं। इस रोग का मुख्य कारण पित्त की विकृति है। इसके लिए कुछ मुख्य उपाय निम्नलिखित हैः–

1. रोगी को गर्म पानी में नमक मिलाकर पिलाना चाहिए। जिससे तुरन्त उल्टी हो जाएगी, और रोगी को कुछ ही क्षण में आराम मिल जाएगा।
2. बेल के पतों को पीसकर उसमें मिश्री मिलाकर लेने से जलन व खट्टी डकारें समाप्त हो जाएगीं।
3. सन्तरें के रस में भुना हुआ जीरा व सेन्धा नमक मिलाकर पीने से खट्टी डकारे व जलन शान्त होती है।
4. सफ़ेद जीरा व धनिया सम मात्रा में पीस लें। फिर शक्कर या मिश्री मिलाकर एक चम्मच पानी से लेना लाभकारी है।
5. 25 ग्राम मुनक्का 12 ग्राम सौंफ रात को पानी में भिगो दें। सुबह पानी में उनको खूब मसलकर मिश्री मिलाकर पीने से तुरन्त आराम मिलता है।
6. 20 ग्राम सूखा आँवला रात को पानी में भिगो दें। प्रातःकाल उस पानी में आधा चम्मच जीरा चूर्ण, आधा चम्मच सौंठ चूर्ण, दूध या पानी में घोलकर पीना लाभकारी हैं। दूध से लेना हो तो मिश्री जरूर मिलाएं।

इन्हें आजमा कर देखें।

रविन्द्र अग्रवाल
योगमाया से साभार

डी.ए.वी. जयपुर में हुई एक अन्तर्राष्ट्रीय संगीत गोष्ठी

डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल वैशाली नगर, जयपुर में एक विशेष संगीत सभा का आयोजन हुआ जिसमें विद्यालय के संगीत विभाग ने ईस्ट इण्डियन म्यूज़िक अकादमी, न्यूयॉर्क, अमेरिका के संगीतज्ञों के साथ मिलकर गायन व वादन की प्रस्तुतियां दीं।

विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा ने बताया कि अमेरिका, न्यूयॉर्क स्थित ईस्ट इण्डियन म्यूजिक अकादमी की प्राचार्या पण्डिता भारती रामसमूज एवं विभागाध्यक्ष अविरोध शर्मा के साथ स्थानीय विद्यालय के श्री राधावल्लभ सक्सेना एवं श्रीमती कृष्ण गोस्वामी ने मधुर संगीत मय गायन व वादन किया। इससे पूर्व प्राचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा ने दोनों कलाकार अतिथियों का पुष्पगुच्छों व डी.ए.वी. पटवस्त्र से मन्चोच्चार पूर्वक स्वागत किया।

श्रीमती भारती व उनके पुत्र अविरोध यूनाइटेड स्टेट्स, गयाना व त्रिनिनाद वेस्टइण्डीज़ में वैदिक धर्म एवं आर्य समाज का प्रचार प्रसार करने में अहर्निश संलग्न हैं। अविरोध शर्मा अन्तर्राष्ट्रीय तबला वादक हैं।

श्रीमती भारती एवं अविरोध डी.ए.वी. संस्था के कार्यक्रम एवं उद्देश्य जानकर अभिभूत हुए उन्होंने कहा कि वे शिक्षा के क्षेत्र के साथ ही समाज सेवा में संलग्न डी ए वी के योगदान से अति आप्रभावित हैं तथा ऐसी संस्थाओं का अमेरिका सहित पाश्चात्य देशों में होना अत्यन्त आवश्यक है जिससे नैतिक मूल्यों का समावेश आगामी पीढ़ी में किया जा सके। उन्होंने इस लघु किन्तु महत्वपूर्ण आयोजन के लिए डी.ए.वी. वैशाली नगर जयपुर का धन्यवाद किया। प्राचार्य महोदय ने भी दोनों विदेशी अतिथियों का मधुर संगीत प्रस्तुति के लिए आभार व्यक्त किया।

डी.ए.वी. कॉलेज, बठिण्डा में मासिक यज्ञ का आयोजन

डी.ए.वी. कॉलेज, बठिण्डा में मासिक यज्ञ परम्परा का निवर्हन करते हुए फरवरी माह का हवन 1 फरवरी 2020 को किया गया। विविध मंत्रोच्चारण से यज्ञ करते हुए **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** की कामना से यज्ञाग्नि में आहुतियाँ डालकर वैदिक परम्परा का पालन किया गया।

कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्षा व आर्य समाज मंत्री डॉ. मोनिका घुल्ला व सम्पूर्ण टीम प्रो. नेहा गर्ग, प्रो. मनीष, प्रो. सोनिया मंगला व प्रो. रमनदीप द्वारा सम्पूर्ण प्रबंध उचित रूप से किया गया।

यजमान की भूमिका का निवर्हन श्री राजिन्द्र शर्मा (अधीक्षक लेखा दफतर) ने किया। प्राध्यापक वर्ग तथा गैर शिक्षक कर्मचारी वर्ग ने यज्ञ में आहुतियां डाल कर ईश्वर से कॉलेज की उन्नति के साथ-साथ विश्व कल्याण की कामना की।

कॉलेज प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा ने इस आयोजन पर प्रसन्नता अभिव्यक्त की व मुख्य यजमान श्री राजिन्द्र शर्मा को शुभकामनाएं दीं व उनके स्वास्थ्य की प्रार्थना ईश्वर समक्ष की।

कॉलेज उपप्राचार्य प्रो. प्रवीण कुमार गर्ग ने प्राध्यापकों को कर्मयोगी बनने की प्रेरणा दी ताकि छात्र भी उनको आदर्श मानकर अनुसरण करें व कॉलेज विविध उपलब्धियों के बल पर उन्नति के अनुसार शिखरों की ओर अग्रसर हो।

बी.बी.के.डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर में सात दिन का समाज सेवा शिविर सम्पन्न

बी.बी.के.डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन अमृतसर के एन.एन.एस. विभाग द्वारा सात दिवसीय कैम्प की समाप्ति पर विदायगी समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सरदार लखबीर सिंह, ए.आई.जी.सी.आई.डी. तथा विशेष *अतिथि के रूप में श्री संजय सिंह संचालक* नन्ही छाँव तथा सरदार लखबीर सिंह उपस्थित रहे।

इस समारोह में डाक्यूमैंटरी के माध्यम से एन.एन.एस. विभाग द्वारा सात दिनों के अन्तर्गत सम्पन्न की गई भिन्न-भिन्न गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया। दीक्षा मेहरा, अक्षिता मल्होत्रा तथा गरिमा अग्रवाल को क्रमशः बैस्ट कैम्पर, बैस्ट हाईवर्किंग कैम्पर तथा लैन्स विमेन के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। छात्राओं को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

मुख्य अतिथि सरदार लखबीर सिंह ने विद्यार्थी जीवन के दौरान सेवा भावना का प्रशिक्षण देने के लिए एन.एन.एस. विभाग की सहाराहना की और कहा कि "दूसरों की सेवा में जो प्रसन्नता है वो किसी अन्य वस्तु में नहीं है तथा हमें समाज की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। इसी सेवा में बल पर ही हम एक सुन्दर समाज का निर्माण कर सकते हैं। विद्यार्थी जीवन में ही सेवा भावना के अभ्यास का एन.एन.एस. से बढ़कर कोई अवसर नहीं।" प्रो. सुरभि सेठी द्वारा कैम्प की गतिविधियों को संक्षेप में बताया।

अन्त में श्री सुदर्शन कपूर, अध्यक्ष लोकल मैंनेजिंग कमेटी ने छात्राओं की सेवा भावना की सराहना करते हुए भविष्य में इसी प्रकार के लिए प्रेरित किया तथा उपस्थिति का धन्यवाद किया।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

आर्य प्रादेशिक ...

गए त्याग एवं संघर्ष की कहानी दर्शायी।

स्वामी चैतन्य मुनि जी ने आशीर्वाद दिया और कहा कि लाला लाजपत राय जी ने देश के लिए जो किया वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। लाला लाजपत राय ने युवाओं की क्रांति के लिए प्रेरित किया। आज आवश्यकता है कि युवा पीढ़ी को इन महापुरूषों के जीवन, संघर्ष और त्याग से परिचित करवाया जाए।

डॉ नीलम कामरा ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा और कहा कि लाला लाजपत राय वेदों की सर्वोच्च मानते थे। आर्य समाज को अपनी धर्म माता और महर्षि दयानन्द को अपना ध ार्म पिता मानने वाले लाला लाजपत राय की सत्यार्थ प्रकाश में पूर्ण आस्था थी।

इस अवसर पर महान् आर्य समाजी श्री सत्य पाल पथिक को आर्य समाज में उनकी सेवाओं के लिए आजीवन पुरस्कार से सम्मानित किया और जरूरतमंदों को कंबल वितरित किए गए।

शांति पाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 12/13-02-2020

डी.ए.वी. मलोट ने मनाया बसन्त पंचमी पर्व

डी.ए.वी. एडवर्ड गंज सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल मलोट के प्रांगण में बसंत पंचमी का त्योहार बड़ी धूमधाम व श्रद्धा के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत विकास परिषद के प्रांतीय जनरल सेक्टरी श्री राजेंद्र पपनेजा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती संध्या बठला ने की।

सर्वप्रथम यज्ञ द्वारा सभी के सुख, स्वास्थ्य, आयु, ऐश्वर्य, संपन्नता तथा प्रेम व भाईचारे के साथ मिलकर रहने की प्रार्थना की गई। यज्ञ के यजमान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र पपनेजा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता पपनेजा थे।

प्राचार्या श्रीमती संध्या बठला ने कहा कि बसंत पंचमी का त्यौहार हमें हमेशा अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि जैसे ईश्वर ने हमें बिना मांगे बिना स्वार्थ के सब कुछ प्रदान किया है उसी प्रकार हमें भी निस्वार्थ भाव से एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। बसंत पंचमी के दिन ही वीर हकीकत राय ने धर्म के लिए अपना बलिदान दिया था। इसलिए हम वीर शहीदों को शत शत नमन करते हैं जिन्होंने हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति को अक्षुण्य बनाए रखा।

मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र पपनेजा ने आयोजित कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की तथा डी.ए.वी. मलोट का धन्यवाद करते हुए कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूं कि डी.ए.वी. के इस कार्यक्रम का हिस्सा बना। हम डी.ए.वी. के सदैव हितेषी रहेंगे। डी.ए.वी. विद्यालय हमेशा फलता फूलता तथा प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहे।

हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर का वार्षिक पुरस्कार वितरण सम्पन्न

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर माननीय लैफ्टिनैंट गर्वनर पुडुचेरी डॉ. किरण बेदी मुख्य अतिथि जस्टिस (रिटायर्ड) श्री एन.के. सूद, उप प्रधान डी.ए.वी.सी.एम.सी. व चेयरमैन लोकल मैनेजिंग कमेटी, श्री अरविंद घई, सेक्रेटरी डी.ए.वी.सी.एम.सी. विशिष्ट अतिथि थे।

प्राचार्या प्रो. डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन ने प्लांटर भेंटकर मुख्यातिथि लैफ्टिनैंट गर्वनर डॉ. किरण बेदी तथा अन्य अतिथियों का हार्दिक अभिनंदन किया। समागम का शुभारंभ ज्योति प्रज्ज्वलित कर राष्ट्रीय गान तथा डी.ए.वी. गान से किया गया।

प्राचार्या प्रो. डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन ने अपने सम्बोधन में मुख्य अतिथि एवं अन्य गणमान्य सदस्यों अभिनंदन किया एवं कहा कि डॉ. किरण बेदी का व्यक्तित्व निष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, संबलता एवं सत्यता का परिचायक है।

प्राचार्या जी ने बेटी बचाओ, पढ़ाओ, बेटा समझाओ के साथ साथ बुजुर्गों को अपनाओ का नारा बुलन्द किया।

प्राचार्या डॉ. सरीन ने संस्था की उपलब्धियों संबंधी संक्षिप्त, वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं श्रेष्ठ बनने का शुभाशीष दी।

मुख्यातिथि लैफ्टिनैंट गर्वनर पुडुचेरी डॉ. किरण बेदी ने छात्राओं को संबोधित किया और कहा कि जीवन चुनौतीपूर्ण है आप तभी सुशिक्षित हैं जब आप जीवन की चुनौतियों को पार करने से सशक्त हैं। उन्होंने लड़की को अपना निर्णायक बनने, दहेज प्रथा के विरुद्ध खड़े होने, अपना अस्तित्व कायम रखने हेतु प्रोत्साहित किया।

जस्टिस एन.के. सूद ने अपने शुभाशीष में कहा कि आज का दिन गौरवमय है जब हमारी छात्राएँ अपने परिश्रम का फल प्राप्त कर रही हैं।

इस अवसर पर एच.एम.वी.ई. साथी ऐप का श्री जगजीत भाटिया के संरक्षण में विमोचन किया गया। जिस पर एच.एम.वी की छात्राएँ अपनी किसी भी प्रकार की समस्या व्यक्त कर सकती हैं।

मुख्यातिथि एवं गणमान्य अतिथियों द्वारा 62 छात्राओं को स्वर्ण पदक, 32 छात्राओं को रजत पदक एवं 13 छात्राओं को कांस्य पदक देकर सम्मानित किया गया।

डी.ए.वी. मॉडल टाउन दिल्ली ने की गणतंत्र दिवस में प्रतिभागिता

इस वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजपथ, दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सैन्यप्रदर्शन (परेड) में ''अरविंद गुप्ता डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक स्कूल'' के विद्यार्थियों को भी अपने विद्यालय का प्रतिनिधित्व करने का सुभग गौरव प्राप्त हुआ। इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय कार्यक्रम में संसद सदस्यों के साथ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्य अतिथि– ब्राजील के राष्ट्रपति जायर बोलसोनारो ने भाग लिया। गणतंत्र दिवस परेड में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए चयनित होना गर्व और सम्मान की बात है जिससे छात्रों में अभूतपूर्व उत्साह का संचार हुआ। 'योग – विश्व शान्ति की ओर' विषय पर नृत्य और संगीत की प्रस्तुति के माध्यम से अरविंद गुप्ता डीएवी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल के 160 छात्र–छात्राओं ने शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक मूल्यों का संदेश दिया और सम्पूर्ण देश की ओर से एकता का परिचय दिया।

प्राचार्या श्रीमती सूद ने एक भेंट में कहा कि यह सफलता कुशल नेतृत्त्व, कठिन परिश्रम, निरन्तर प्रयास और सामूहिक सहयोग का प्रतिफल है, इसका प्रत्येक पल हमारे छात्रों के लिए सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि की अनुभूतियों से भरा हुआ अविस्मरणीय क्षण था। छात्रों ने धैर्य, अनुशासन, समयप्रबन्ध, जिम्मेदारी, सामूहिककार्य, ध्यानकेंद्रित, स्मरणशक्ति इत्यादि अनेकों कौशलों को विकसित करते हुए न केवल अपने शैक्षिकगतिविधियों में संगठित होना सीखा, बल्कि देशभक्ति और उत्साह के साथ शानदार प्रदर्शन भी किया। उन्हें राष्ट्र के मूल्यों को समझने में अत्यधिक सहायक हुआ यह प्रदर्शन। एक सौ पैंतीस करोड़ भारतवासियों के राष्ट्रीय महापर्व पर भक्ति भाव सहित पूर्ण उत्साह के संग शानदार प्रदर्शन किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**